كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿٩٥﴾ الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ

उन हंसने वालों पर हम तुम्हें किफ़ायत करते हैं[104] जो अल्लाह के साथ दूसरा मा'बूद ठहराते हैं तो अब

يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿٩٧﴾

जान जाएंगे[105] और बेशक हमें मा'लूम है कि उन की बातों से तुम दिलतंग होते हो[106]

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى

तो अपने रब को सराहते हुए उस की पाकी बोलो और सज्दा वालों में हो[107] और मरते दम तक अपने रब की

يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾ ع

इबादत में रहो

ايـاتها ١٢٨ ‏ ١٦ سُوْرَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ ٧٠ ‏ ركوعاتها ١٦

सूरए नह्ल मक्किय्या है इस में एक सो अठ्ठाईस आयतें और सोलह रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह्म वाला[1]

104 : कुफ़्फ़ारे कुरैश के पांच सरदार [1]आ़स बिन वाइल सहमी और [2]अस्वद बिन मुत्तलिब और [3]अस्वद बिन अ़ब्दे यगूस और [4]हारिस बिन क़ैस और इन सब का अफ़्सर [5]वलीद इब्ने मुग़ीरा मख़्ज़ूमी, येह लोग नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم को बहुत ईज़ा देते और आप के साथ तमस्खुर व इस्तिहज़ा करते थे। अस्वद बिन मुत्तलिब के लिये सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने दुआ़ की थी कि या रब ! इस को अन्धा कर दे। एक रोज़ सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم मस्जिदे हराम में तशरीफ़ फ़रमा थे येह पांचों आए और इन्हों ने हस्बे दस्तूर ता'नो तमस्खुर के कलिमात कहे और त़वाफ़ में मश्गूल हो गए। इसी हाल में हज़रते जिब्रीले अमीन हज़रत की ख़िदमत में पहुंचे और उन्हों ने वलीद बिन मुग़ीरा की पिंडली की त़रफ़ और आ़स के कफ़े पा (पाउं के तल्वों) की त़रफ़ और अस्वद बिन मुत्तलिब की आंखों की त़रफ़ और अस्वद बिन अ़ब्दे यगूस के पेट की त़रफ़ और हारिस बिन क़ैस के सर की त़रफ़ इशारा किया और कहा मैं इन का शर दफ़्अ़ करूंगा। चुनान्चे थोड़े अ़र्से में येह हलाक हो गए, वलीद बिन मुग़ीरा तीर फ़रोश की दुकान के पास से गुज़रा उस के तहबन्द में एक पैकान चुभा (या'नी नेज़े की नोक चुभी) मगर उस ने तकब्बुर से उस को निकालने के लिये सर नीचा न किया, उस से उस की पिंडली में ज़ख़्म आया और उसी में मर गया, आ़स इब्ने वाइल के पाउं में कांटा लगा और नज़र न आया, इस से पाउं वरम कर गया और येह शख़्स भी मर गया, अस्वद बिन मुत्तलिब की आंखों में ऐसा दर्द हुवा कि दीवार में सर मारता था, इसी में मर गया और येह कहता मरा कि मुझ को मुहम्मद ने क़त्ल किया (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) और अस्वद बिन अ़ब्दे यगूस को इस्तिस्क़ा हुवा (या'नी प्यास लगने की बीमारी हो गई) और कल्बी की रिवायत में है कि इस को लू लगी और इस का मुंह इस क़दर काला हो गया कि घर वालों ने न पहचाना और निकाल दिया, इसी हाल में येह कहता मर गया कि मुझ को मुहम्मद (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) के रब ने क़त्ल किया और हारिस बिन क़ैस की नाक से ख़ून और पीप जारी हुवा इसी में हलाक हो गया, इन्हीं के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। (خازن) **105 :** अपना अन्जामे कार **106 :** और उन के ता'न और इस्तिहज़ा और शिर्को कुफ़्र की बातों से आप को मलाल होता है **107 :** कि ख़ुदा परस्तों के लिये तस्बीह व इबादत में मश्गूल होना ग़म का बेहतरीन इलाज है। हदीस शरीफ़ में है कि जब सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم को कोई अहम वाक़िआ़ पेश आता तो नमाज़ में मश्गूल हो जाते। **1 :** सूरए नह्ल मक्किय्या है मगर आयत ''فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ'' से आख़िर सूरत तक जो आयात हैं वोह मदीनए त़य्यिबा में नाज़िल हुईं और इस में और अक़्वाल भी हैं, इस सूरत में सोलह रुकूअ़ और एक सो अठ्ठाईस आयतें और दो हज़ार आठ सो चालीस कलिमे और सात हज़ार सात सो सात हर्फ़ हैं।

www.dawateislami.net

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝١

अब आता है अल्लाह का हुक्म तो उस की जल्दी न करो[2] पाकी और बरतरी है उसे उन के शरीकों से[3]

يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اَنْ

मलाएका को ईमान की जान या'नी वह्य ले कर अपने जिन बन्दों पर चाहे उतारता है[4] कि

اَنْذِرُوْۤا اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ۝٢ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ

डर सुनाओ कि मेरे सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो मुझ से डरो[5] उस ने आस्मान और ज़मीन

بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٣ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ

बजा बनाए[6] वोह उन के शिर्क से बरतर है (उस ने) आदमी को एक निथरी बूंद से बनाया[7] तो जभी

خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝٤ وَ الْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْٓءٌ وَّ مَنَافِعُ وَ مِنْهَا

खुला झगड़ालू है और चौपाए पैदा किये उन में तुम्हारे लिये गर्म लिबास और मन्फ़अतें हैं[8] और उन में से

تَاْكُلُوْنَ ۝٥ وَ لَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَ حِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝٦

खाते हो और तुम्हारा उन में तजम्मुल है जब उन्हें शाम को वापस लाते हो और जब चरने को छोड़ते हो

وَ تَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ؕ اِنَّ

और वोह तुम्हारे बोझ उठा कर ले जाते हैं ऐसे शहर की तरफ़ कि तुम उस तक न पहुंचते मगर अधमरे हो कर बेशक

رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٧ وَّ الْخَيْلَ وَ الْبِغَالَ وَ الْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَ

तुम्हारा रब निहायत मेहरबान रह़्म वाला है[9] और घोड़े और ख़च्चर और गधे कि इन पर सुवार हो और

2 शाने नुज़ूल : जब कुफ़्फ़ार ने अ़ज़ाबे मौऊ़द (मुक़र्ररा अ़ज़ाब) के नुज़ूल और क़ियामत के क़ाइम होने की ब तरीक़े तक्ज़ीब व इस्तिह्ज़ा जल्दी की इस पर येह आयत नाज़िल हुई और बता दिया गया कि जिस की तुम जल्दी करते हो वोह कुछ दूर नहीं बहुत ही क़रीब है और अपने वक़्त पर बिल यक़ीन वाक़ेअ़ होगा और जब वाक़ेअ़ होगा तो तुम्हें उस से ख़लास की कोई राह न मिलेगी और वोह बुत जिन्हें तुम पूजते हो तुम्हारे कुछ काम न आएंगे। **3 :** वोह वाहिद "لَاشَرِیْکَ لَہٗ" है उस का कोई शरीक नहीं **4 :** और उन्हें नुबुव्वत व रिसालत के साथ बरगुज़ीदा करता है **5 :** और मेरी ही इबादत करो और मेरे सिवा किसी को न पूजो क्यूं कि मैं वोह हूं कि **6 :** जिन में उस की तौहीद के बे शुमार दलाइल हैं। **7 :** या'नी मनी से, जिस में न ह़िस है न ह़रकत, फिर उस को अपनी क़ुदरते कामिला से इन्सान बनाया, क़ुव्वतो ताक़त अ़त़ा की। **शाने नुज़ूल :** येह आयत उबय बिन ख़लफ़ के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मरने के बा'द ज़िन्दा होने का इन्कार करता था। एक मरतबा वोह किसी मुर्दे की गली हुई हड्डी उठा लाया और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहने लगा कि आप का येह ख़याल है कि अल्लाह तआ़ला इस हड्डी को ज़िन्दगी देगा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और निहायत नफ़ीस जवाब दिया गया कि हड्डी तो कुछ न कुछ उ़ज़्वी शक्ल रखती भी है अल्लाह तआ़ला तो मनी के एक छोटे से बे ह़िसो ह़रकत क़त़रे से तुझ जैसा झगड़ालू इन्सान पैदा कर देता है, येह देख कर भी तू उस की क़ुदरत पर ईमान नहीं लाता। **8 :** कि उन की नस्ल से दौलत बढ़ाते हो, उन के दूध पीते हो और उन पर सुवारी करते हो **9 :** कि उस ने तुम्हारे नफ़्अ़ और आराम के लिये येह चीज़ें पैदा कीं।

www.dawateislami.net

زِينَةً ؕ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨﴾ وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا

ज़ीनत के लिये और वोह पैदा करेगा[10] जिस की तुम्हें ख़बर नहीं[11] और बीच की राह[12] ठीक अल्लाह तक है और कोई राह

ع ١ ٩ ٧ جَآئِرٌ ؕ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩﴾ ع هُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ

टेढ़ी है[13] और चाहता तो तुम सब को राह पर लाता[14] वोही है जिस ने आस्मान से

مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ﴿١٠﴾ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ

पानी उतारा इस से तुम्हारा पीना है और इस से दरख़्त हैं जिन से चराते हो[15] इस पानी से तुम्हारे लिये

الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ

खेती उगाता है और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और हर क़िस्म के फल[16] बेशक

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿١١﴾ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ

इस में निशानी है[17] ध्यान करने वालों को और उस ने तुम्हारे लिये मुसख़्ख़र (ताबेअ़) किये रात और दिन

وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

और सूरज और चांद और सितारे उस के हुक्म के बांधे हैं बेशक इस में निशानियां हैं

لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿١٢﴾ ۙ وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ

अ़क़्ल मन्दों को[18] और वोह जो तुम्हारे लिये ज़मीन में पैदा किया रंग बरंग[19] बेशक

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣﴾ وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا

इस में निशानी है याद करने वालों को और वोही है जिस ने तुम्हारे लिये दरिया मुसख़्ख़र किया[20] कि उस में से

10 : ऐसी अ़जीबो ग़रीब चीज़ें **11 :** इस में वोह तमाम चीज़ें आ गईं जो आदमी के नफ़्अ़ व राहत व आरामो आसाइश के काम आती हैं और उस वक़्त तक मौजूद नहीं हुई थीं। अल्लाह तआ़ला को उन का आयिन्दा पैदा करना मन्ज़ूर था जैसे की दुख़ानी (भाप से चलने वाले) जहाज़, रेलें, मोटर, हवाई जहाज़, बर्क़ी (बिजली की) क़ुव्वतों से काम करने वाले आलात, दुख़ानी (धूएं वाली) और बर्क़ी (बिजली वाली) मशीनें, ख़बर रसानी व नश्रे सौत (आवाज़ फैलाने) के सामान और ख़ुदा जाने इस के इ़लावा उस को क्या क्या पैदा करना मन्ज़ूर है। **12 :** या'नी सिराते मुस्तक़ीम और दीने इस्लाम क्यूं कि दो मक़ामों के दरमियान जितनी राहें निकाली जाएं उन में से जो बीच की राह होगी वोही सीधी होगी। **13 :** जिस पर चलने वाला मन्ज़िले मक़्सूद को नहीं पहुंच सकता, कुफ़्र की तमाम राहें ऐसी ही हैं। **14 :** राहे रास्त पर **15 :** अपने जानवरों को और अल्लाह तआ़ला **16 :** मुख़्तलिफ़ सूरत व रंग, मज़े, बू, ख़ासिय्यत वाले कि सब एक ही पानी से पैदा होते हैं और हर एक के औसाफ़ दूसरे से जुदा हैं, येह सब अल्लाह की ने'मतें हैं। **17 :** उस की क़ुदरतो हिक्मत और वह्दानिय्यत की **18 :** जो इन चीज़ों में ग़ौर कर के समझें कि अल्लाह तआ़ला फ़ाइले मुख़्तार है और उ़ल्विय्यात (बुलन्दियां) व सिफ़्लिय्यात (पस्तियां) सब उस के तह्ते क़ुदरतो इख़्तियार **19 :** ख़्वाह हैवानों की क़िस्म से हो या दरख़्तों की या फलों की। **20 :** कि उस में कश्तियों पर सुवार हो कर सफ़र करो या ग़ोते लगा कर उस की तह तक पहुंचो या उस से शिकार करो।

www.dawateislami.net

مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ

ताज़ा गोश्त खाते हो[21] और उस में से गहना (ज़ेवर) निकालते हो जिसे पहनते हो[22] और तू उस में कश्तियां देखे

مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٤﴾ وَاَلْقٰى فِي

कि पानी चीर कर चलती हैं और इस लिये कि तुम उस का फ़ज़्ल तलाश करो और कहीं एहसान मानो और उस ने

الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥﴾ لا

ज़मीन में लंगर डाले[23] कि कहीं तुम्हें ले कर न कांपे और नदियां और रस्ते कि तुम राह पाओ[24]

وَعَلٰمٰتٍ ؕ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ؕ

और अ़लामतें[25] और सितारे से वोह राह पाते हैं[26] तो क्या जो बनाए[27] वोह ऐसा हो जाएगा जो न बनाए[28]

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٧﴾ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ

तो क्या तुम नसीहत नहीं मानते और अगर अल्लाह की ने'मतें गिनो तो उन्हें शुमार न कर सकोगे[29] बेशक अल्लाह

لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿١٩﴾ وَالَّذِيْنَ

बख़्शने वाला मेहरबान है[30] और अल्लाह जानता है[31] जो छुपाते और ज़ाहिर करते हो और

يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿٢٠﴾ ؕ اَمْوَاتٌ

अल्लाह के सिवा जिन को पूजते हैं[32] वोह कुछ भी नहीं बनाते और[33] वोह ख़ुद बनाए हुए हैं[34] मुर्दे हैं[35]

غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٢١﴾ ع اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ ٢ ١٢ ٨

ज़िन्दा नहीं और उन्हें ख़बर नहीं लोग कब उठाए जाएंगे[36] तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है[37]

فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٢٢﴾

तो वोह जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उन के दिल मुन्किर हैं[38] और वोह मग़रूर[39]

21 : या'नी मछली। **22 :** या'नी गौहर व मरजान। **23 :** भारी पहाड़ों के **24 :** अपने मक़ासिद की त़रफ़ **25 :** बनाईं जिन से तुम्हें रस्ते का पता चले। **26 :** ख़ुश्की और तरी में और इस से उन्हें रस्ते और क़िब्ले की पहचान होती है। **27 :** इन तमाम चीज़ों को अपनी क़ुदरतो हिक्मत से या'नी अल्लाह तआ़ला। **28 :** किसी चीज़ को और आ़जिज़ व बे क़ुदरत हो जैसे कि बुत तो आ़क़िल को कब सज़ावार (लाइक़) है कि ऐसे ख़ालिक़ो मालिक की इबादत छोड़ कर आ़जिज़ व बे इख़्तियार बुतों की परस्तिश करे या उन्हें इबादत में उस का शरीक ठहराए। **29 :** चे जाए कि उन के शुक्र से ओ़हदा बरआ हो सको। **30 :** कि तुम्हारे अदाए शुक्र से क़ासिर होने के बा वुजूद अपनी ने'मतों से तुम्हें महरूम नहीं फ़रमाता। **31 :** तुम्हारे तमाम अक़्वाल व अफ़्आ़ल **32 :** या'नी बुतों को **33 :** बनाएं क्या कि **34 :** और अपने वुजूद में बनाने वाले के मोह़ताज और वोह **35 :** बे जान **36 :** तो ऐसे मजबूर और बे जान बे इल्म मा'बूद कैसे हो सकते हैं इन दलाइले क़ाते़आ़ से साबित हो गया कि **37 :** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो अपनी ज़ात व सिफ़ात में नज़ीर व शरीक से पाक है। **38 :** वहदानिय्यत के **39 :** कि हक़ ज़ाहिर हो जाने के बा वुजूद उस का इत्तिबाअ़ नहीं करते।

www.dawateislami.net

لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ

फ़िल हक़ीक़त अल्लाह जानता है जो छुपाते और जो ज़ाहिर करते हैं बेशक वोह मग़रूरों

الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿۲۳﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَاۤ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْۤا اَسَاطِيْرُ

को पसन्द नहीं फ़रमाता और जब उन से कहा जाए[40] तुम्हारे रब ने क्या उतारा[41] कहें अगलों की

الْاَوَّلِيْنَ ﴿۲۴﴾ لِيَحْمِلُوْۤا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ اَوْزَارِ

कहानियां हैं[42] कि क़ियामत के दिन अपने[43] बोझ पूरे उठाएं और कुछ बोझ

الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿۲۵﴾ قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ ع ۳۴

उन के जिन्हें अपनी जहालत से गुमराह करते हैं सुन लो क्या ही बुरा बोझ उठाते हैं बेशक उन से अगलों ने[44]

مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ

फ़रेब किया था तो अल्लाह ने उन की चुनाई को नीव (बुन्याद) से लिया तो ऊपर से उन पर छत गिर

فَوْقِهِمْ وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۶﴾ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

पड़ी और अ़ज़ाब उन पर वहां से आया जहां की उन्हें ख़बर न थी[45] फिर क़ियामत के दिन

يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ

उन्हें रुस्वा करेगा और फ़रमाएगा कहां हैं मेरे वोह शरीक[46] जिन में तुम झगड़ते थे[47]

الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۷﴾

इल्म वाले[48] कहेंगे आज सारी रुस्वाई और बुराई[49] काफ़िरों पर है

40 : या'नी लोग उन से दरयाफ़्त करें कि **41 :** मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर तो **42 :** या'नी झूटे अफ़्साने, कोई मानने की बात नहीं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन हारिस की शान में नाज़िल हुई, उस ने बहुत सी कहानियां याद कर ली थीं, उस से जब कोई क़ुरआने करीम की निस्बत दरयाफ़्त करता तो वोह येह जानने के बा वुजूद कि क़ुरआन शरीफ़ किताबे मो'जिज़ (आजिज़ करने वाली) और हक़ व हिदायत से मम्लू (भरी हुई) है। लोगों को गुमराह करने के लिये येह कह देता कि येह पहले लोगों की कहानियां हैं ऐसी कहानियां मुझे भी बहुत याद हैं। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि लोगों को इस त़रह़ गुमराह करने का अन्जाम येह है **43 :** गुनाहों और गुमराही व गुमराह गरी के **44 :** या'नी पहली उम्मतों ने अपने अम्बिया के साथ **45 :** येह एक तम्सील (मिसाल) है कि पिछली उम्मतों ने अपने रसूलों के साथ मक्र करने के लिये कुछ मन्सूबे बनाए थे अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ख़ुद उन्हीं के मन्सूबों में हलाक किया और उन का ह़ाल ऐसा हुवा जैसे किसी क़ौम ने कोई बुलन्द इमारत बनाई, फिर वोह इमारत उन पर गिर पड़ी और वोह हलाक हो गए, इसी त़रह़ कुफ़्फ़ार अपनी मक्कारियों से ख़ुद बरबाद हुए। मुफ़स्सिरीन ने येह भी ज़िक्र किया है कि इस आयत में अगले मक्र करने वालों से नमरूद बिन कन्आन मुराद है जो ज़मानए इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام में रूए ज़मीन का सब से बड़ा बादशाह था। उस ने बाबिल में बहुत ऊंची एक इमारत बनाई थी जिस की बुलन्दी पांच हज़ार गज़ थी और उस का मक्र येह था कि उस ने येह बुलन्द इमारत अपने ख़याल में आस्मान पर पहुंचने और आस्मानों वालों से लड़ने के लिये बनाई थी अल्लाह तआ़ला ने हवा चलाई और वोह इमारत उन पर गिर पड़ी और वोह लोग हलाक हो गए। **46 :** जो तुम ने घड़ लिये थे और **47 :** मुसल्मानों से **48 :** या'नी उन उम्मतों के अम्बिया व उ़लमा जो उन्हें दुन्या में ईमान की दा'वत देते और नसीह़त करते थे और येह लोग उन की बात न मानते थे **49 :** या'नी अ़ज़ाब।

www.dawateislami.net

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۪ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ

वोह कि फ़िरिश्ते उन की जान निकालते हैं इस ह़ाल पर कि वोह अपना बुरा कर रहे थे[50] अब सुल्ह़ डालेंगे[51] कि हम तो कुछ

مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۸﴾ فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ

बुराई न करते थे[52] हां क्यूं नहीं बेशक **अल्लाह** ख़ूब जानता है जो तुम्हारे कौतक (करतूत) थे[53] अब जहन्नम के दरवाज़ों

جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ

में जाओ कि हमेशा उस में रहो तो क्या ही बुरा ठिकाना मग़रूरों का और डर वालों[54] से

اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ

कहा गया तुम्हारे रब ने क्या उतारा बोले ख़ूबी[55] जिन्हों ने इस दुन्या में भलाई की[56] उन के

الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ؕ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۰﴾ ۙ جَنّٰتُ

लिये भलाई है[57] और बेशक पिछला घर सब से बेहतर और ज़रूर[58] क्या ही अच्छा घर परहेज़ गारों का बसने के

عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ؕ

बाग़ जिन में जाएंगे उन के नीचे नहरें रवां उन्हें वहां मिलेगा जो चाहें[59]

كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۱﴾ ۙ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ

अल्लाह ऐसा ही सिला देता है परहेज़ गारों को वोह जिन की जान निकालते हैं फ़िरिश्ते सुथरे पन में[60]

50 : या'नी कुफ़्र में मुब्तला थे। **51 :** और वक़्ते मौत अपने कुफ़्र से मुकर जाएंगे और कहेंगे **52 :** इस पर फ़िरिश्ते कहेंगे **53 :** लिहाज़ा येह इन्कार तुम्हें मुफ़ीद नहीं। **54 :** या'नी ईमानदारों **55 :** या'नी "क़ुरआन शरीफ़" जो तमाम ख़ूबियों का जामेअ़ और ह़सनातो बरकात का मम्बअ़ और दीनी व दुन्यवी और ज़ाहिरी व बात़िनी कमालात का सरचश्मा है। **शाने नुज़ूल :** क़बाइले अ़रब अय्यामे ह़ज में ह़ज़रत नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के तह़क़ीक़े ह़ाल के लिये मक्कए मुकर्रमा को क़ासिद भेजते थे, येह क़ासिद जब मक्कए मुकर्रमा पहुंचते और शहर के कनारे रास्तों पर उन्हें कुफ़्फ़ार के कारन्दे मिलते (जैसा कि साबिक़ में ज़िक्र हो चुका है) उन से येह क़ासिद नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ह़ाल दरयाफ़्त करते तो वोह बहकाने पर मामूर ही होते थे। उन में से कोई ह़ज़रत को साहिर कहता, कोई काहिन, कोई शाइर, कोई कज़्ज़ाब, कोई मजनून और इस के साथ येह भी कह देते कि तुम उन से न मिलना येही तुम्हारे ह़क़ में बेहतर है, इस पर क़ासिद कहते कि अगर हम मक्कए मुकर्रमा पहुंच कर बिग़ैर उन से मिले अपनी क़ौम की त़रफ़ वापस हों तो हम बुरे क़ासिद होंगे और ऐसा करना क़ासिद के मन्सबी फ़राइज़ का तर्क और क़ौम की ख़ियानत होगी, हमें तह़क़ीक़ के लिये भेजा गया है हमारा फ़र्ज़ है कि हम उन के अपने और बेगानों सब से उन के ह़ाल की तह़क़ीक़ करें और जो कुछ मा'लूम हो उस से बे कमो कास्त (बिग़ैर कमी बेशी के) क़ौम को मुत्तलअ़ करें, इस ख़याल से वोह लोग मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हो कर अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से भी मिलते थे और उन से आप के ह़ाल की तह़क़ीक़ करते थे, अस्ह़ाबे किराम उन्हें तमाम ह़ाल बताते थे और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ह़ालातो कमालात और क़ुरआने करीम के मज़ामीन से मुत्तलअ़ करते थे। उन का ज़िक्र इस आयत में फ़रमाया गया। **56 :** या'नी ईमान लाए और नेक अ़मल किये **57 :** या'नी ह़याते त़य्यिबा है और फ़त्ह़ो ज़फ़र व रिज़्क़े वसीअ़ वग़ैरा ने'मतें। **58 :** दारे आख़िरत **59 :** और येह बात जन्नत के सिवा किसी को कहीं भी ह़ासिल नहीं। **60 :** कि वोह शिर्क व कुफ़्र से पाक होते हैं और उन के अक़्वालो अफ़्आल और अख़्लाक़ व ख़िसाल पाकीज़ा होते हैं, त़ाअ़तें साथ होती हैं, मुह़र्रमात व मम्नूआत के दाग़ों से उन का दामने अ़मल मैला नहीं होता, क़ब्ज़े रूह़ के वक़्त उन को जन्नत व रिज़्वान व रह़मतो करामत की बिशारतें दी जाती हैं, इस ह़ालत में मौत उन्हें ख़ुश गवार मा'लूम होती है और जान फ़रह़तो सुरूर के साथ जिस्म से निकलती है और मलाएका इ़ज़्ज़त के साथ उस को क़ब्ज़

www.dawateislami.net

يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٢﴾ هَلْ

येह कहते हुए कि सलामती हो तुम पर[61] जन्नत में जाओ बदला अपने किये का काहे के

يَنْظُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ

इन्तिज़ार में हैं[62] मगर इस के कि फ़िरिश्ते इन पर आएं[63] या तुम्हारे रब का अ़ज़ाब आए[64] इन से अगलों

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٣٣﴾

ने भी ऐसा ही किया[65] और अल्लाह ने उन पर कुछ ज़ुल्म न किया हां वोह ख़ुद ही[66] अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे

فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٤﴾ ع ١٠

तो उन की बुरी कमाइयां उन पर पड़ीं[67] और उन्हें घेर लिया उस[68] ने जिस पर हंसते थे

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ

और मुश्रिक बोले अल्लाह चाहता तो उस के सिवा कुछ न पूजते

نَّحْنُ وَلَاۤ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ

न हम और न हमारे बाप दादा और न उस से जुदा हो कर हम कोई चीज़ ह़राम ठहराते[69] ऐसा ही

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ

इन से अगलों ने किया[70] तो रसूलों पर क्या है मगर साफ़ पहुंचा देना[71] और बेशक

بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ

हर उम्मत में से हम ने एक रसूल भेजा[72] कि अल्लाह को पूजो और शैत़ान से बचो

فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِي

तो उन[73] में किसी को अल्लाह ने राह दिखाई[74] और किसी पर गुमराही ठीक उतरी[75] तो ज़मीन में चल

करते हैं। (ख़ाज़न) **61 :** मरवी है कि क़रीबे मौत बन्दए मोमिन के पास फ़िरिश्ता आ कर कहता है : ऐ अल्लाह के दोस्त ! तुझ पर सलाम और अल्लाह तआ़ला तुझे सलाम फ़रमाता है और आख़िरत में उन से कहा जाएगा : **62 :** कुफ़्फ़ार क्यूं ईमान नहीं लाते ? किस चीज़ के इन्तिज़ार में हैं **63 :** इन की अरवाह क़ब्ज़ करने **64 :** दुन्या में या रोज़े क़ियामत। **65 :** या'नी पहली उम्मतों के कुफ़्फ़ार ने भी, कि कुफ़्र व तक्ज़ीब पर क़ाइम रहे। **66 :** कुफ़्र इख़्तियार कर के **67 :** और उन्हों ने अपने आ'माले ख़बीसा की सज़ा पाई **68 :** अ़ज़ाब **69 :** मिस्ल बह़ीरा व साइबा वग़ैरा के, इस से उन की मुराद येह थी कि इन का शिर्क करना और इन चीज़ों को ह़राम क़रार दे लेना अल्लाह की मशिय्यत व मरज़ी से है, इस पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : **70 :** कि रसूलों की तक्ज़ीब की और ह़लाल को ह़राम किया और ऐसे ही तमस्ख़ुर की बातें कहीं। **71 :** ह़क़ का ज़ाहिर कर देना और शिर्क के बात़िल व क़बीह़ होने पर मुत्त़लअ़ कर देना। **72 :** और हर रसूल को हुक्म दिया कि वोह अपनी क़ौम से फ़रमाएं **73 :** उम्मतों **74 :** वोह ईमान से मुशर्रफ़ हुए **75 :** वोह अपनी अज़ली शक़ावत से कुफ़्र पर मरे और ईमान से महरूम रहे।

www.dawateislami.net

الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۳۶﴾ اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى

फिर कर देखो कैसा अन्जाम हुवा झुटलाने वालों का[76] अगर तुम उन की

هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ يُّضِلُّ وَ مَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۳۷﴾

हिदायत की ह़िर्स करो[77] तो बेशक **अल्लाह** हिदायत नहीं देता जिसे गुमराह करे और उन का कोई मददगार नहीं

وَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ؕ بَلٰى وَعْدًا

और उन्हों ने **अल्लाह** की क़सम खाई अपने ह़ल्फ़ में ह़द की कोशिश से कि **अल्लाह** मुर्दे न उठाएगा[78] हां क्यूं नहीं[79]

عَلَيْهِ حَقًّا وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۸﴾ ۙ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِيْ

सच्चा वा'दा उस के ज़िम्मे पर लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते[80] इस लिये कि उन्हें साफ़ बता दे जिस

يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَ لِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ﴿۳۹﴾ اِنَّمَا

बात में झगड़ते थे[81] और इस लिये कि काफ़िर जान लें कि वोह झूटे थे[82] जो चीज़

قَوْلُنَا لِشَیْءٍ اِذَاۤ اَرَدْنٰهُ اَنْ نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۴۰﴾ ع وَ الَّذِيْنَ هَاجَرُوْا ع ٥

हम चाहें उस से हमारा फ़रमाना येही होता है कि हम कहें हो जा वोह फ़ौरन हो जाती है[83] और जिन्हों ने **अल्लाह** की

فِی اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَ لَاَجْرُ

राह में[84] अपने घरबार छोड़े मज़्लूम हो कर ज़रूर हम उन्हें दुन्या में अच्छी जगह देंगे[85] और बेशक

الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۱﴾ ۙ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَ عَلٰى رَبِّهِمْ وقف لازم

आख़िरत का सवाब बहुत बड़ा है किसी त़रह़ लोग जानते[86] वोह जिन्हों ने सब्र किया[87] और अपने रब ही पर

76 : जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने हलाक किया और उन के शहर वीरान किये, उजड़ी हुई बस्तियां उन के हलाक की ख़बर देती हैं, इस को देख कर समझो कि अगर तुम भी उन की त़रह़ कुफ़्रो तक्ज़ीब पर मुसिर रहे तो तुम्हारा भी ऐसा ही अन्जाम होना है। **77 :** ऐ मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ब ह़ाले कि येह लोग उन में से हैं जिन की गुमराही साबित हो चुकी और उन की शक़ावत अज़ली है। **78 शाने नुज़ूल :** एक मुशरिक एक मुसल्मान का मक़्रूज़ था मुसल्मान ने मुशरिक पर तक़ाज़ा किया, दौराने गुफ़्तगू में उस ने इस त़रह़ **अल्लाह** की क़सम खाई कि "उस की क़सम जिस से मैं मरने के बा'द मिलने की तमन्ना रखता हूं" इस पर मुशरिक ने कहा कि तेरा येह ख़याल है कि तू मरने के बा'द उठेगा और मुशरिक ने क़सम खा कर कहा कि **अल्लाह** मुर्दे न उठाएगा। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया **79 :** या'नी ज़रूर उठाएगा। **80 :** इस उठाने की ह़िक्मत और उस की क़ुदरत बेशक वोह मुर्दों को उठाएगा। **81 :** या'नी मुर्दों को उठाने में कि वोह ह़क़ है **82 :** और मुर्दों के ज़िन्दा किये जाने का इन्कार ग़लत़। **83 :** तो हमें मुर्दों को ज़िन्दा कर देना क्या दुश्वार। **84 :** उस के दीन की ख़ात़िर हिजरत की। **शाने नुज़ूल :** क़तादा ने कहा कि येह आयत अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन पर अहले मक्का ने बहुत ज़ुल्म किये और उन्हें दीन की ख़ात़िर वत़न छोड़ना ही पड़ा, बा'ज़ उन में से ह़बशा चले गए फिर वहां से मदीनए त़य्यिबा आए और बा'ज़ मदीना शरीफ़ ही को हिजरत कर गए उन्हों ने **85 :** वोह मदीनए त़य्यिबा है जिस को **अल्लाह** तआ़ला ने उन के लिये दारुल हिजरत (हिजरत गाह) बनाया। **86 :** या'नी कुफ़्फ़ार या वोह लोग जो हिजरत करने से रह गए कि इस का अज्र कितना अ़ज़ीम है। **87 :** वत़न की मुफ़ारक़त और कुफ़्फ़ार की ईज़ा और जान व माल के ख़र्च करने पर।

يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ

भरोसा करते हैं[88] और हम ने तुम से पहले न भेजे मगर मर्द[89] जिन की तरफ़ हम वहय करते

فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٣﴾ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ؕ

तो ऐ लोगो इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं[90] रोशन दलीलें और किताबें ले कर[91]

وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ

और ऐ महबूब हम ने तुम्हारी तरफ़ येह यादगार उतारी[92] कि तुम लोगों से बयान कर दो जो[93] उन की तरफ़ उतरा और कहीं वोह

يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٤﴾ اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ النصف

ध्यान करें तो क्या जो लोग बुरे मक्र करते हैं[94] इस से नहीं डरते कि अल्लाह उन्हें ज़मीन में

الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٤٥﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ

धंसा दे[95] या उन्हें वहां से अज़ाब आए जहां से उन्हें ख़बर न हो[96] या उन्हें चलते फिरते[97]

فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٤٦﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ ؕ فَاِنَّ

पकड़ ले कि वोह थका नहीं सकते[98] या उन्हें नुक़्सान देते देते गिरिफ़्तार कर ले कि बेशक

رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤٧﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ

तुम्हारा रब निहायत मेहरबान रहम वाला है[99] और क्या उन्हों ने न देखा कि जो[100] चीज़ अल्लाह ने बनाई है

يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ دٰخِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

उस की परछाइयां दाहने और बाएं झुकती हैं[101] अल्लाह को सज्दा करती और वोह उस के हुज़ूर ज़लील हैं[102]

88 : और उस के दीन की वज्ह से जो पेश आए उस पर राज़ी हैं और ख़ल्क़ से इन्क़िताअ़ (अ़लाहदगी इख़्तियार) कर के बिल्कुल हक़ की तरफ़ मुतवज्जेह हैं और सालिक के लिये येह इन्तिहाए सुलूक का मक़ाम है। **89 शाने नुज़ूल :** येह आयत मुश्रिकीने मक्का के जवाब में नाज़िल हुई जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत का इस तरह इन्कार किया था कि अल्लाह तआ़ला की शान इस से बरतर है कि वोह किसी बशर को रसूल बनाए। उन्हें बताया गया कि सुन्नते इलाही इसी तरह जारी है, हमेशा उस ने इन्सानों में से मर्दों ही को रसूल बना कर भेजा। **90 :** हदीस शरीफ़ में है : बीमारिये जहल की शिफ़ा उ़लमा से दरयाफ़्त करना है, लिहाज़ा उ़लमा से दरयाफ़्त करो, वोह तुम्हें बता देंगे कि सुन्नते इलाहिय्यह यूंही जारी रही कि उस ने मर्दों को रसूल बना कर भेजा। **91 :** मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह है कि मा'ना येह हैं कि रोशन दलीलों और किताबों के जानने वालों से पूछो अगर तुम को दलील व किताब का इल्म न हो। **मस्अला :** इस आयत से तक़्लीदे अइम्मा का वुजूब साबित होता है। **92 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़। **93 :** हुक्म **94 :** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्हाब के साथ और इन की ईज़ा के दरपै रहते हैं और छुप छुप कर फ़साद अंगेज़ी की तदबीरें किया करते हैं जैसे कि कुफ़्फ़ारे मक्का। **95 :** जैसे क़ारून को धंसा दिया था **96 :** चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि बद्र में हलाक किये गए बा वुजूदे कि वोह येह नहीं समझते थे। **97 :** सफ़रो हज़र में हर एक ह़ाल में **98 :** ख़ुदा को अ़ज़ाब करने से। **99 :** कि हिल्म करता है और अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता। **100 :** सायादार **101 :** सुब्ह और शाम **102 :** ख़्वार व आजिज़ व मुतीअ़ व मुसख़्ख़र।

www.dawateislami.net

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَ

और अल्लाह ही को सज्दा करते हैं जो कुछ आस्मानों और जो कुछ ज़मीन में चलने वाला है[103] और फ़िरिश्ते और

هُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۴۹﴾ يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا

वोह ग़ुरूर नहीं करते अपने ऊपर अपने रब का ख़ौफ़ करते हैं और वोही करते हैं जो

يُؤْمَرُوْنَ ﴿۵۰﴾ ۩ وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ السجدة ع ۱۲

उन्हें हुक्म हो[104] और अल्लाह ने फ़रमाया दो ख़ुदा न ठहराओ[105] वोह तो एक ही

وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ﴿۵۱﴾ وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ

मा'बूद है तो मुझी से डरो[106] और उसी का है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है और उसी की

الدِّيْنُ وَاصِبًا ؕ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ

फ़रमां बरदारी लाज़िम है तो क्या अल्लाह के सिवा किसी दूसरे से डरोगे[107] और तुम्हारे पास जो ने'मत है सब अल्लाह की त़रफ़ से है

ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْـَٔرُوْنَ ﴿۵۳﴾ ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا

फिर जब तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचती है[108] तो उसी की त़रफ़ पनाह ले जाते हो[109] फिर जब वोह तुम से बुराई टाल देता है तो

فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿۵۴﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۫

तुम में एक गुरौह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है[110] कि हमारी दी ने'मतों की नाशुक्री करें तो कुछ बरत लो[111]

فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ؕ

कि अन्क़रीब जान जाओगे[112] और अन्जानी चीज़ों के लिये[113] हमारी दी हुई रोज़ी में से[114] ह़िस्सा मुक़र्रर करते हैं

تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿۵۶﴾ وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ

ख़ुदा की क़सम तुम से ज़रूर सुवाल होना है जो कुछ झूट बांधते थे[115] और अल्लाह के लिये बेटियां ठहराते हैं[116]

103 : सज्दा दो त़रह पर है : **एक** सज्दए त़ाअ़तो इ़बादत जैसा कि मुसल्मानों का सज्दा अल्लाह के लिये, **दूसरा** सज्दए इन्क़ियाद (फ़रमां बरदारी) व ख़ुज़ूअ़ जैसा कि साया वग़ैरा का सज्दा, हर चीज़ का सज्दा उस के ह़स्बे हैसिय्यत है, मुसल्मानों और फ़िरिश्तों का सज्दा, सज्दए त़ाअ़तो इ़बादत है और इन के मा सिवा का सज्दा सज्दए इन्क़ियाद व ख़ुज़ूअ़। 104 : इस आयत से साबित हुवा कि फ़िरिश्ते मुकल्लफ़ हैं और जब साबित कर दिया गया कि तमाम आस्मान व ज़मीन की काएनात अल्लाह के ह़ुज़ूर ख़ाज़ेअ़ व मुतवाज़ेअ़ और आ़बिद व मुत़ीअ़ है और सब उस के मम्लूक और उसी के तह़्ते क़ुदरतो तसर्रुफ़ हैं तो शिर्क से मुमानअ़त फ़रमाई। 105 : क्यूं कि दो तो ख़ुदा हो ही नहीं सकते। 106 : मैं ही वोह मा'बूदे बरह़क़ हूं जिस का कोई शरीक नहीं है। 107 : बा वुजूदे कि मा'बूदे बरह़क़ सिर्फ़ वोही है। 108 : ख़्वाह फ़क़्र की या मरज़ की या और कोई 109 : उसी से दुआ़ मांगते हो उसी से फ़रियाद करते हो। 110 : और उन लोगों का अन्जाम येह होता है 111 : और चन्द रोज़ इस ह़ालत में ज़िन्दगी गुज़ार लो 112 : कि इस का क्या नतीजा हुवा। 113 : या'नी बुतों के लिये जिन का इलाह और मुस्तह़िक़ और नाफ़ेअ़ व ज़ार (फ़ाएदा मन्द व नुक़्सान देह) होना उन्हें मा'लूम नहीं। 114 : या'नी खेतियों और चौपायों वग़ैरा में से 115 : बुतों को मा'बूद और अहले तक़र्रुब और बुत परस्ती को ख़ुदा का हुक्म बता कर 116 : जैसे कि ख़ुज़ाआ़ व किनाना कहते थे कि फ़िरिश्ते अल्लाह

www.dawateislami.net

سُبْحٰنَهٗ ؕ وَ لَهُمْ مَّا یَشْتَهُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَ اِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ

पाकी है उस को[117] और अपने लिये जो अपना जी चाहता है[118] और जब उन में किसी को बेटी होने की ख़ुश ख़बरी दी जाती है तो दिन भर

وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّ هُوَ كَظِیْمٌ ﴿۵۸﴾ یَتَوٰرٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ

उस का मुंह[119] काला रहता है और वोह ग़ुस्सा खाता है लोगों से[120] छुपता फिरता है इस बिशारत की बुराई के सबब क्या

بِهٖ ؕ اَیُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ یَدُسُّهٗ فِی التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا

इसे ज़िल्लत के साथ रखेगा या इसे मिट्टी में दबा देगा[121] अरे बहुत ही बुरा

یَحْكُمُوْنَ ﴿۵۹﴾ لِلَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَ لِلّٰهِ

हुक्म लगाते हैं[122] जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उन्हीं का बुरा ह़ाल है और अल्लाह

الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ؕ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۶۰﴾ وَ لَوْ یُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ ع ۷ ۱۳

की शान सब से बुलन्द[123] और वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है और अगर अल्लाह लोगों को उन के ज़ुल्म पर गिरिफ़्त करता[124]

بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَیْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّ لٰكِنْ یُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ

तो ज़मीन पर कोई चलने वाला नहीं छोड़ता[125] लेकिन उन्हें एक ठहराए वा'दे तक मोहलत देता है[126]

فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا یَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّ لَا یَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۶۱﴾

फिर जब उन का वा'दा आएगा न एक घड़ी पीछे हटें न आगे बढ़ें

وَ یَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا یَكْرَهُوْنَ وَ تَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ

और अल्लाह के लिये वोह ठहराते हैं जो अपने लिये ना गवार है[127] और उन की ज़बानें झूटों कहती हैं कि उन के लिये

की बेटियां हैं। (مَعَاذَاللّٰه) **117 :** वोह बरतर है औलाद से और उस की शान में ऐसा कहना निहायत बे अदबी व कुफ़्र है। **118 :** या'नी कुफ़्र के साथ येह कमाले बद तमीज़ी भी है कि अपने लिये बेटे पसन्द करते हैं बेटियां ना पसन्द करते हैं और अल्लाह तआ़ला के लिये जो मुत्लक़न औलाद से मुनज़्ज़ा और पाक है और उस के लिये औलाद ही का साबित करना ऐ़ब लगाना है, उस के लिये औलाद में भी वोह साबित करते हैं जिस को अपने लिये ह़क़ीर और सबबे आ़र जानते हैं। **119 :** ग़म से **120 :** शर्म के मारे **121 :** जैसा कि कुफ़्फ़ारे मुज़र व ख़ुज़ाआ़ व तमीम (क़बीले) लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ देते थे। **122 :** कि अल्लाह तआ़ला के लिये बेटियां साबित करते हैं जो अपने लिये उन्हें इस क़दर ना गवार हैं। **123 :** कि वोह वालिद व वलद (औलाद) सब से पाक और मुनज़्ज़ा कोई उस का शरीक नहीं, तमाम सिफ़ात जलाल व कमाल से मुत्तसिफ़ **124 :** या'नी मआ़सी पर पकड़ता और अ़ज़ाब में जल्दी फ़रमाता **125 :** सब को हलाक कर देता। ज़मीन पर चलने वाले से या काफ़िर मुराद हैं जैसा कि दूसरी आयत में वारिद है : ''اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَاللّٰهِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا'' या येह मा'ना हैं कि रूए ज़मीन पर किसी चलने वाले को बाक़ी नहीं छोड़ता जैसा कि नूह عَلَیْهِ السَّلَام के ज़माने में जो कोई ज़मीन पर था उन सब को हलाक कर दिया सिर्फ़ वोही बाक़ी रहे जो ज़मीन पर न थे ह़ज़रते नूह عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ कश्ती में थे और एक क़ौल येह भी है कि मा'ना येह हैं कि ज़ालिमों को हलाक कर देता और उन की नस्लें मुन्क़त़अ़ हो जातीं फिर ज़मीन में कोई बाक़ी नहीं रहता। **126 :** अपने फ़ज़्लो करम और ह़िल्म से, ठहराए वा'दे से या इख़्तितामे उ़म्र मुराद है या क़ियामत। **127 :** या'नी बेटियां और शरीक।

www.dawateislami.net

الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾ تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ

भलाई है[128] तो आप ही हुवा कि उन के लिये आग है और वोह हद से गुज़ारे हुए हैं[129] ख़ुदा की क़सम हम ने तुम से पहले

اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ

कितनी उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे तो शैतान ने उन के कौतक (बुरे आ'माल) उन की आंखों में भले कर दिखाए[130] तो आज वोही उन का रफ़ीक़ है[131]

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ

और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है[132] और हम ने तुम पर येह किताब न उतारी[133] मगर इस लिये कि तुम लोगों पर रोशन कर दो

الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَاللّٰهُ

जिस बात में इख़्तिलाफ़ करें[134] और हिदायत और रहमत ईमान वालों के लिये और अल्लाह

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ

ने आस्मान से पानी उतारा तो उस से ज़मीन को[135] ज़िन्दा कर दिया उस के मरे पीछे[136] बेशक इस में

لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾ ع وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا ع ١٤

निशानी है उन को जो कान रखते हैं[137] और बेशक तुम्हारे लिये चौपायों में निगाह हासिल होने की जगह है[138] हम तुम्हें पिलाते हैं उस चीज़ में से

فِىْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

जो उन के पेट में है गोबर और ख़ून के बीच में से ख़ालिस दूध गले से सहल उतरता पीने वालों के लिये[139]

128 : या'नी जन्नत। कुफ़्फ़ार बा वुजूद अपने कुफ़्र व बोहतान के और ख़ुदा के लिये बेटियां बताने के भी अपने आप को हक़ पर गुमान करते थे और कहते थे कि अगर मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) सच्चे हों और ख़ल्क़त मरने के बा'द फिर उठाई जाए तो जन्नत हमीं को मिलेगी क्यूं कि हम हक़ पर हैं उन के हक़ में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : **129 :** जहन्नम ही में छोड़ दिये जाएंगे। **130 :** और उन्हों ने अपनी बदियों को नेकियां समझा **131 :** दुन्या में उसी के कहे पर चलते हैं और जो शैतान को अपना रफ़ीक़ और मुख़्तारे कार बनाए वोह ज़रूर ज़लीलो ख़्वार हो या येह मा'ना हैं कि रोज़े आख़िरत शैतान के सिवा उन्हें कोई रफ़ीक़ न मिलेगा और शैतान ख़ुद ही गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब होगा उन की क्या मदद कर सकेगा। **132 :** आख़िरत में। **133 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ **134 :** उमूरे दीन से **135 :** रूईदगी (नबातात) से सर सब्ज़ी व शादाबी बख़्श कर **136 :** या'नी ख़ुश्क और बे सब्ज़ा व बे गियाह होने के बा'द। **137 :** और सुन कर समझते और ग़ौर करते हैं वोह इस नतीजे पर पहुंचते हैं जो क़ादिरे बरहक़ ज़मीन को उस की मौत या'नी कुव्वते नामिया (बढ़ने की कुव्वत) फ़ना हो जाने के बा'द फिर ज़िन्दगी देता है वोह इन्सान को उस के मरने के बा'द बेशक ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। **138 :** अगर तुम इस में ग़ौर करो तो बेहतर नताइज हासिल कर सकते हो और हिक्मते इलाहिय्यह के अ़जाइब पर तुम्हें आगाही हासिल हो सकती है। **139 :** जिस में कोई शाएबा किसी चीज़ की आमैज़िश का नहीं बा वुजूदे कि हैवान के जिस्म में ग़िज़ा का एक ही मक़ाम है जहां चारा, घास, भूसा वग़ैरा पहुंचता है और दूध, ख़ून, गोबर सब उसी ग़िज़ा से पैदा होते हैं, उन में से एक दूसरे से मिलने नहीं पाता। दूध में न ख़ून की रंगत का शाएबा होता है न गोबर की बू का, निहायत साफ़ लतीफ़ बरआमद होता है। इस से हिक्मते इलाहिय्यह की अ़जीब कारी ज़ाहिर है। ऊपर मस्अला बअ़्स का बयान हो चुका है या'नी मुर्दों को ज़िन्दा किये जाने का, कुफ़्फ़ार इस के मुन्किर थे और उन्हें इस में दो शुब्हे दरपेश थे : **एक** तो येह कि जो चीज़ फ़ासिद हो गई और उस की हयात जाती रही उस में दोबारा फिर ज़िन्दगी किस तरह लौटेगी, इस शुब्हे का इज़ाला तो इस से पहली आयत में फ़रमा दिया गया कि तुम देखते रहते हो कि हम मुर्दा ज़मीन को ख़ुश्क होने के बा'द आस्मान से पानी बरसा कर हयात अ़ता फ़रमा दिया करते हैं तो क़ुदरत का येह फ़ैज़ देखने के बा'द किसी मख़्लूक़ का मरने के बा'द ज़िन्दा होना ऐसे क़ादिरे मुत्लक़ की क़ुदरत से बईद नहीं। **दूसरा** शुब्हा कुफ़्फ़ार का येह था कि जब आदमी मर गया और उस के जिस्म के अज्ज़ा मुन्तशिर हो गए और ख़ाक में मिल गए वोह अज्ज़ा किस तरह जम्अ़ किये

www.dawateislami.net

وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَ الْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّ رِزْقًا

और खजूर और अंगूर के फलों में से[140] कि इस से नबीज़ बनाते हो और अच्छा

حَسَنًا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَ اَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ

रिज़्क़[141] बेशक इस में निशानी है अ़क़्ल वालों को और तुम्हारे रब ने शहद की मख्खी को इल्हाम किया

اَنِ اتَّخِذِیْ مِنَ الْجِبَالِ بُیُوْتًا وَّ مِنَ الشَّجَرِ وَ مِمَّا یَعْرِشُوْنَ ﴿۶۸﴾ ثُمَّ

कि पहाड़ों में घर बना और दरख़्तों में और छतों में फिर

كُلِیْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِیْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ یَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا

हर क़िस्म के फल में से खा और[142] अपने रब की राहें चल कि तेरे लिये नर्म व आसान हैं[143] उस के पेट से एक

شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِیْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ

पीने की चीज़[144] रंग बरंग निकलती है[145] जिस में लोगों की तन्दुरुस्ती है[146] बेशक इस में निशानी है[147]

یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۶۹﴾ وَ اللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ یَتَوَفّٰىكُمْ وَ مِنْكُمْ مَّنْ یُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ

ध्यान करने वालों को[148] और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया[149] फिर तुम्हारी जान क़ब्ज़ करेगा[150] और तुम में कोई सब से नाक़िस उ़म्र की तरफ़

जाएंगे और ख़ाक के ज़र्रों से उन को किस तरह मुमताज़ किया जाएगा ? इस आयते करीमा में जो साफ़ दूध का बयान फ़रमाया उस में ग़ौर करने से वोह शुब्हा बिल्कुल नेस्तो नाबूद हो जाता है कि क़ुदरते इलाही की येह शान तो रोज़ाना देखने में आती है कि वोह ग़िज़ा के मख़्लूत अज्ज़ा में से ख़ालिस दूध निकालता है और इस के क़ुर्बो जवार की चीज़ों की आमैज़िश का शाएबा भी इस में नहीं आता, उस ह़कीमे बरह़क़ की क़ुदरत से क्या बईद कि इन्सानी जिस्म के अज्ज़ा को मुन्तशिर होने के बा'द फिर मुज्तमअ़ फ़रमा दे। शक़ीक़ बल्ख़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि ने'मत का इत्माम येही है कि दूध साफ़ ख़ालिस आए और उस में ख़ून और गोबर के रंग व बू का नामो निशान न हो वरना ने'मत ताम न होगी और त़ब्ए़ सलीम इस को क़बूल न करेगी, जैसी साफ़ ने'मत परवर्दगार की त़रफ़ से पहुंचती है बन्दे को लाज़िम है कि वोह भी परवर्दगार के साथ इख़्लास से मुआ़मला करे और उस के अ़मल रिया और हवाए नफ़्स की आमैज़िशों से पाको साफ़ हों ताकि शरफ़े क़बूल से मुशर्रफ़ हों। **140 :** हम तुम्हें रस पिलाते हैं **141 :** या'नी सिर्का और रुब (पका हुवा रस जो जमा लिया गया हो) और ख़ुरमा (खजूर) और मवीज़ (बड़े सूखे हुए अंगूर)। **मस्अला :** मवीज़ और अंगूर वग़ैरा का रस जब इस क़दर पका लिया जाए कि दो तिहाई जल जाए और एक तिहाई बाक़ी रहे और तेज़ हो जाए इस को नबीज़ कहते हैं, येह ह़द सुक्र तक न पहुंचे और नशा न लाए तो शैख़ैन के नज़्दीक ह़लाल है और येही आयत और बहुत सी अह़ादीस इन की दलील है। **142 :** फलों की तलाश में **143 :** फ़ज़्ले इलाही से जिन का तुझे इल्हाम किया गया है ह़त्ता कि तुझे चलना फिरना दुश्वार नहीं और तू कितनी ही दूर निकल जाए राह नहीं बहक्ती और अपने मक़ाम पर वापस आ जाती है। **144 :** या'नी शहद **145 :** सफ़ेद और ज़र्द और सुर्ख़। **146 :** और नाफ़ेअ़ तरीन दवाओं में से है और ब कसरत मआ़जीन में शामिल किया जाता है। **147 : अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरतो ह़िक्मत पर **148 :** कि उस ने एक कमज़ोर ना तुवान मख्खी को ऐसी ज़ीरकी व दानाई (अ़क़्ल मन्दी) अ़त़ा फ़रमाई और ऐसी दक़ीक़ सन्अ़तें मर्ह़मत कीं, पाक है वोह और अपनी ज़ातो सिफ़ात में शरीक से मुनज़्ज़ा, इस से फ़िक्र करने वालों को इस पर भी तम्बीह हो जाती है कि वोह अपनी क़ुदरते कामिला से एक अदना ज़ईफ़ सी मख्खी को येह सिफ़त अ़त़ा फ़रमाता है कि वोह मुख़्तलिफ़ क़िस्म के फूलों और फलों से ऐसे लत़ीफ़ अज्ज़ा ह़ासिल करे जिन से नफ़ीस शहद बने जो निहायत ख़ुश गवार हो, त़ाहिर व पाकीज़ा हो, फ़ासिद होने और सड़ने की उस में क़ाबिलिय्यत न हो, तो जो क़ादिर ह़कीम एक मख्खी को इस मादे के जम्अ़ करने की क़ुदरत देता है वोह अगर मरे हुए इन्सान के मुन्तशिर अज्ज़ा को जम्अ़ कर दे तो उस की क़ुदरत से क्या बईद है कि मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने को मुह़ाल (ना मुम्किन) समझने वाले किस क़दर अह़मक़ हैं। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दों पर अपनी क़ुदरत के वोह आसार ज़ाहिर फ़रमाता है जो ख़ुद उन में और उन के अह़वाल में नुमायां हैं। **149 :** अ़दम से और नीस्ती (जब तुम्हारा वुजूद ही न था इस) के बा'द हस्ती अ़त़ा फ़रमाई, कैसी अ़जीब क़ुदरत है। **150 :** और तुम्हें ज़िन्दगी के बा'द मौत देगा जब तुम्हारी अजल पूरी हो जो उस ने मुक़र्रर फ़रमाई है ख़्वाह बचपन में या जवानी में या बुढ़ापे में।

www.dawateislami.net

الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿۷۰﴾ وَ اللّٰهُ ع ١٥ ٩

फेरा जाता है[151] कि जानने के बा'द कुछ न जाने[152] बेशक अल्लाह सब कुछ जानता सब कुछ कर सकता है और अल्लाह ने

فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَآدِّيْ

तुम में एक को दूसरे पर रिज़्क़ में बड़ाई दी[153] तो जिन्हें बड़ाई दी है

رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ؕ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ

वोह अपना रिज़्क़ अपने बांदी ग़ुलामों को न फेर देंगे कि वोह सब उस में बराबर हो जाएं[154] तो क्या अल्लाह की ने'मत से

يَجْحَدُوْنَ ﴿۷۱﴾ وَ اللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ

मुकरते हैं[155] और अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी जिन्स से औ़रतें बनाईं और तुम्हारे लिये

اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَ حَفَدَةً وَّ رَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ

तुम्हारी औ़रतों से बेटे और पोते नवासे पैदा किये और तुम्हें सुथरी चीज़ों से रोज़ी दी[156] तो क्या झूटी बात[157] पर

يُؤْمِنُوْنَ وَ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿۷۲﴾ وَ يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا

यक़ीन लाते हैं और अल्लाह के फ़ज़्ल[158] से मुन्किर होते हैं और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं[159] जो

لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿۷۳﴾

उन्हें आस्मान और ज़मीन से कुछ भी रोज़ी देने का इख़्तियार नहीं रखते न कुछ कर सकते हैं

فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَ اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۷۴﴾ ضَرَبَ

तो अल्लाह के लिये मानिन्द न ठहराओ[160] बेशक अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते अल्लाह ने एक

151 : जिस का ज़माना उ़म्रे इन्सानी के मरातिब में साठ साल के बा'द आता है कि क़ुवा (ताक़तें) और ह़वास सब नाकारा हो जाते हैं और इन्सान की येह ह़ालत हो जाती है 152 : और नादानी में बच्चों से ज़ियादा बदतर हो जाए। इन तग़य्युरात में क़ुदरते इलाही के कैसे अ़जाइब मुशाहदे में आते हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि मुसल्मान ब फ़ज़्ले इलाही इस से मह़फ़ूज़ हैं, तूले उ़म्र व बक़ा से इन्हें अल्लाह के ह़ुज़ूर में करामत और अ़क़्लो मा'रिफ़त की ज़ियादती ह़ासिल होती है और हो सकता है कि तवज्जोह इलल्लाह का ऐसा ग़लबा हो कि इस आ़लम से इन्क़िता़अ़ हो जाए और बन्दए मक़्बूल दुन्या की त़रफ़ इल्तिफ़ात से मुज्तनिब हो। इ़क्रिमा का क़ौल है कि जिस ने क़ुरआने पाक पढ़ा वोह इस अरज़ल (नाक़िस) उ़म्र की ह़ालत को न पहुंचेगा कि इल्म के बा'द महज़ बे इ़ल्म हो जाए। 153 : तो किसी को ग़नी किया किसी को फ़क़ीर किसी को मालदार किसी को नादार किसी को मालिक किसी को मम्लूक। 154 : और बांदी ग़ुलाम आक़ाओं के शरीक हो जाएं, जब तुम अपने ग़ुलामों को अपना शरीक बनाना गवारा नहीं करते तो अल्लाह के बन्दों और उस के मम्लूकों को उस का शरीक ठहराना किस त़रह़ गवारा करते हो سُبْحٰنَ اللّٰہ ! येह बुत परस्ती का कैसा नफ़ीस दिल नशीन और ख़ातिर ग़ुज़ीन रद है। 155 : कि उस को छोड़ कर मख़्लूक़ को पूजते हैं। 156 : क़िस्म क़िस्म के ग़ल्लों, फलों, मेवों, खाने पीने की चीज़ों से। 157 : या'नी शिर्क व बुत परस्ती 158 : अल्लाह के फ़ज़्लो ने'मत से सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी या इस्लाम मुराद है। (مدارک) 159 : या'नी बुतों को 160 : उस का किसी को शरीक न करो।

www.dawateislami.net

اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا

कहावत बयान फ़रमाई[161] एक बन्दा है दूसरे की मिल्क आप कुछ मक्दूर (ताक़त) नहीं रखता और एक वोह जिसे हम ने अपनी तरफ़ से अच्छी रोज़ी

حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ؕ هَلْ يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ

अ़ता फ़रमाई तो वोह उस में से ख़र्च करता है छुपे और ज़ाहिर[162] क्या वोह बराबर हो जाएंगे[163] सब ख़ूबियां **अल्लाह** को हैं बल्कि

اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَاۤ اَبْكَمُ

उन में अक्सर को ख़बर नहीं[164] और **अल्लाह** ने कहावत बयान फ़रमाई दो मर्द एक गूंगा

لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ

जो कुछ काम नहीं कर सकता[165] और वोह अपने आक़ा पर बोझ है जिधर भेजे कुछ भलाई न लाए[166]

هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۷۶﴾ وَ

क्या बराबर हो जाएगा येह और वोह जो इन्साफ़ का हुक्म करता है और वोह सीधी राह पर है[167] और

لِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَاۤ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ

अल्लाह ही के लिये हैं आस्मानों और ज़मीन की छुपी चीज़ें[168] और क़ियामत का मुआ़मला नहीं मगर जैसे एक पलक का मारना

اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۷۷﴾ وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ

बल्कि इस से भी क़रीब[169] बेशक **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है और **अल्लाह** ने तुम्हें तुम्हारी

بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَ

माओं के पेट से पैदा किया कि कुछ न जानते थे[170] और तुम्हें कान और आंख और

161 : येह कि **162 :** जैसे चाहता है तसर्रुफ़ करता है, तो वोह आ़जिज़ मम्लूक ग़ुलाम और येह आज़ाद मालिक साहिबे माल जो ब फ़ज़्ले इलाही क़ुदरतो इख़्तियार रखता है। **163 :** हरगिज़ नहीं तो जब ग़ुलाम व आज़ाद बराबर नहीं हो सकते बा वुजूदे कि दोनों **अल्लाह** के बन्दे हैं तो **अल्लाह** ख़ालिक़, मालिक, क़ादिर के साथ बे क़ुदरतो इख़्तियार बुत कैसे शरीक हो सकते हैं और इन को उस के मिस्ल क़रार देना कैसा बड़ा ज़ुल्म व जहल है। **164 :** कि ऐसे बराहीने बय्यिना और हुज्जते वाज़ेहा (रोशन और वाज़ेह दलाइल) के होते हुए शिर्क करना कितने बड़े वबाल व अ़ज़ाब का सबब है। **165 :** न अपनी किसी से कह सके न दूसरे की समझ सके **166 :** और किसी काम न आए येह मिसाल काफ़िर की है। **167 :** येह मिसाल मोमिन की है। मा'ना येह हैं कि काफ़िर नाकारा गूंगे ग़ुलाम की तरह है वोह किसी तरह मुसल्मान की मिस्ल नहीं हो सकता जो अ़द्ल का हुक्म करता है और सिराते मुस्तक़ीम पर क़ाइम है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि गूंगे नाकारा ग़ुलाम से बुतों को तम्सील दी गई और इन्साफ़ का हुक्म देना शाने इलाही का बयान हुवा, इस सूरत में मा'ना येह हैं कि **अल्लाह** तआ़ला के साथ बुतों को शरीक करना बातिल है क्यूं कि इन्साफ़ क़ाइम करने वाले बादशाह के साथ गूंगे और नाकारा ग़ुलाम को क्या निस्बत। **168 :** इस में **अल्लाह** तआ़ला के कमाले इल्म का बयान है कि वोह जमीअ़ ग़ुयूब का जानने वाला है, उस पर कोई छुपने वाली चीज़ पोशीदा नहीं रह सकती। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस से मुराद इल्मे क़ियामत है। **169 :** क्यूं कि पलक मारना भी ज़माना चाहता है जिस में पलक की हरकत हासिल हो और **अल्लाह** तआ़ला जिस चीज़ का होना चाहे वोह "कुन" फ़रमाते ही हो जाती है। **170 :** और अपनी पैदाइश की इब्तिदा और अव्वल फ़ितरत में इल्मो मा'रिफ़त से ख़ाली थे।

الْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۸﴾ اَلَمْ یَرَوْا اِلَى الطَّیْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِیْ جَوِّ

दिल दिये[171] कि तुम एहसान मानो[172] क्या उन्हों ने परिन्दे न देखे हुक्म के बांधे आस्मान की

السَّمَآءِ ؕ مَا یُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۷۹﴾

फ़ज़ा में उन्हें कोई नहीं रोकता[173] सिवा ख़ुदा के बेशक इस में निशानियां हैं ईमान वालों को[174]

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُیُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ

और अल्लाह ने तुम्हें घर दिये बसने को[175] और तुम्हारे चौपायों की खालों से कुछ

بُیُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا یَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَ یَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَ مِنْ اَصْوَافِهَا

घर बनाए[176] जो तुम्हें हलके पड़ते हैं तुम्हारे सफ़र के दिन और मन्ज़िलों पर ठहरने के दिन और उन की ऊन

وَ اَوْبَارِهَا وَ اَشْعَارِهَاۤ اَثَاثًا وَّ مَتَاعًا اِلٰى حِیْنٍ ﴿۸۰﴾ وَ اللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ

और बबरी (ऊंट के बाल) और बालों से कुछ गिरस्ती (घरेलू ज़रूरिय्यात) का सामान[177] और बरत्ने की चीज़ें एक वक़्त तक और अल्लाह ने तुम्हें अपनी बनाई हुई

مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّ جَعَلَ لَكُمْ سَرَابِیْلَ

चीज़ों[178] से साए दिये[179] और तुम्हारे लिये पहाड़ों में छुपने की जगह बनाई[180] और तुम्हारे लिये कुछ पहनावे बनाए

تَقِیْكُمُ الْحَرَّ وَ سَرَابِیْلَ تَقِیْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ یُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَیْكُمْ

कि तुम्हें गरमी से बचाएं और कुछ पहनावे[181] कि लड़ाई में तुम्हारी हिफ़ाज़त करें[182] यूंही अपनी ने'मत तुम पर पूरी करता है[183]

لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿۸۱﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَیْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِیْنُ ﴿۸۲﴾

कि तुम फ़रमान मानो[184] फिर अगर वोह मुंह फेरें[185] तो ऐ महबूब तुम पर नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना[186]

171 : कि इन से अपना पैदाइशी जहल दूर करो 172 : और इल्मो अमल से फ़ैज़याब हो कर मुन्इम (ने'मत देने वाले) का शुक्र बजा लाओ और उस की इबादत में मश्गूल हो और उस के हुक़ूक़ ने'मत अदा करो। 173 : गिरने से बा वुजूदे कि जिस्मे सक़ील (भारी जिस्म) बित्तबअ गिरना चाहता है। 174 : कि उस ने इन्हें ऐसा पैदा किया कि वोह हवा में परवाज़ कर सकते हैं और अपने जिस्मे सक़ील की तबीअ़त के ख़िलाफ़ हवा में ठहरे रहते हैं गिरते नहीं और हवा को ऐसा पैदा किया कि इस में उन की परवाज़ मुम्किन है, ईमानदार इस में ग़ौर कर के क़ुदरते इलाही का ए'तिराफ़ करते हैं। 175 : जिन में तुम आराम करते हो 176 : मिस्ल ख़ैमा वग़ैरा के 177 : बिछाने ओढ़ने की चीज़ें। **मस्अला :** येह आयत अल्लाह की ने'मतों के बयान में है मगर इस से इशारतन ऊन और पश्मीने (ऊनी कपड़े) और बालों की तहारत और इन से नफ़्अ़ उठाने की हिल्लत साबित होती है। 178 : मकानों, दीवारों, छतों, दरख़्तों और अब्र (बादलों) वग़ैरा 179 : जिस में तुम आराम करते हो 180 : ग़ार वग़ैरा, कि अमीर व ग़रीब सब आराम कर सकें 181 : ज़िरह व जौशन वग़ैरा 182 : कि तीर, तलवार, नेज़े वग़ैरा से बचाव का सामान हो। 183 : दुन्या में तुम्हारे हवाइज व ज़रूरिय्यात का सामान पैदा फ़रमा कर 184 : और उस की ने'मतों का ए'तिराफ़ कर के इस्लाम लाओ और दीने बरहक़ क़बूल करो। 185 : और ऐ सय्यिदे आलम ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم वोह आप पर ईमान लाने और आप की तस्दीक़ करने से ए'राज़ करें और अपने कुफ़्र पर जमे रहें 186 : और जब आप ने पयामे इलाही पहुंचा दिया तो आप का काम पूरा हो चुका और न मानने का वबाल उन की गरदन पर रहा।

www.dawateislami.net

ع

يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۳﴾ وَيَوْمَ

अल्लाह की ने'मत पहचानते हैं[187] फिर उस से मुन्किर होते हैं[188] और उन में अक्सर काफ़िर हैं[189] और जिस दिन[190]

نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ

हम उठाएंगे हर उम्मत में से एक गवाह[191] फिर काफ़िरों को न इजाज़त हो[192] न वोह

يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَ

मनाए जाएं[193] और ज़ुल्म करने वाले[194] जब अ़ज़ाब देखेंगे उसी वक़्त से न वोह उन पर से हलका हो

لَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۸۵﴾ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا

न उन्हें मोहलत मिले और शिर्क करने वाले जब अपने शरीकों को देखेंगे[195] कहेंगे ऐ हमारे रब

هٰٓؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ فَاَلْقَوْا اِلَيْهِمُ

येह हैं हमारे शरीक कि हम तेरे सिवा पूजते थे तो वोह उन पर बात फेंकेंगे

الثلثة

الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۸۶﴾ ۚ وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذِ ࣙالسَّلَمَ وَضَلَّ

कि तुम बेशक झूटे हो[196] और उस दिन[197] अल्लाह की त़रफ़ आ़जिज़ी से गिरेंगे[198] और उन से

عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۸۷﴾ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

गुम हो जाएंगी जो बनावटें करते थे[199] जिन्हों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका

زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ﴿۸۸﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ

हम ने अ़ज़ाब पर अ़ज़ाब बढ़ाया[200] बदला उन के फ़साद का और जिस दिन हम

كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ؕ

हर गुरौह में एक गवाह उन्हीं में से उठाएंगे कि उन पर गवाही दे[201] और ऐ मह़बूब तुम्हें उन सब पर[202] शाहिद बना कर लाएंगे

---

187 : या'नी जो ने'मतें कि ज़िक्र की गईं उन सब को पहचानते हैं और जानते हैं कि येह सब अल्लाह की त़रफ़ से हैं फिर भी उस का शुक्र बजा नहीं लाते। सुद्दी का क़ौल है कि अल्लाह की ने'मत से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मुराद हैं, इस तक़्दीर पर मा'ना येह हैं कि वोह हुज़ूर को पहचानते हैं और समझते हैं कि आप का वुजूद अल्लाह तआ़ला की बड़ी ने'मत है और बा वुजूद इस के 188 : और दीने इस्लाम क़बूल नहीं करते 189 : मुआ़निद (ह़ासिदीन) कि ह़सद व इनाद से कुफ़्र पर क़ाइम रहते हैं। 190 : या'नी रोज़े क़ियामत 191 : जो उन की तस्दीक़ व तक्ज़ीब और ईमान व कुफ़्र की गवाही दे और येह गवाह अम्बिया हैं عَلَيْهِمُ السَّلَام। 192 : मा'ज़िरत की या किसी कलाम की या दुन्या की त़रफ़ लौटने की 193 : या'नी न उन से इताब व मलामत दूर की जाए। 194 : या'नी कुफ़्फ़ार 195 : बुतों वग़ैरा को जिन्हें पूजते थे 196 : जो हमें मा'बूद बताते हो, हम ने तुम्हें अपनी इबादत की दा'वत नहीं दी। 197 : मुश्रिकीन 198 : और उस के फ़रमां बरदार होना चाहेंगे 199 : दुन्या में बुतों को ख़ुदा का शरीक बता कर 200 : उन के कुफ़्र का अ़ज़ाब और दूसरों को ख़ुदा की राह से रोकने और गुमराह करने का अ़ज़ाब 201 : येह गवाह अम्बिया होंगे जो अपनी अपनी उम्मतों पर गवाही देंगे। 202 : उम्मतों और उन के शाहिदों पर जो अम्बिया होंगे

www.dawateislami.net

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى

और हम ने तुम पर येह क़ुरआन उतारा कि हर चीज़ का रोशन बयान है[203] और हिदायत और रह़मत और बिशारत

لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿٨٩﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى ع ١٢ ١٨

मुसल्मानों को बेशक अल्लाह हुक्म फ़रमाता है इन्साफ़ और नेकी[204] और रिश्तेदारों के देने का[205]

وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩٠﴾

और मन्अ़ फ़रमाता है बे ह़याई[206] और बुरी बात[207] और सरकशी से[208] तुम्हें नसीह़त फ़रमाता है कि तुम ध्यान करो

وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا

और अल्लाह का अ़ह्द पूरा करो[209] जब क़ौल बांधो और क़समें मज़बूत कर के न तोड़ो

जैसा कि दूसरी आयत में वारिद हुवा : ''فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا'' (ابوالسعود وغیرہ) **203 :** जैसा कि दूसरी आयत में इर्शाद फ़रमाया : ''مَافَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ'' और तिरमिज़ी की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने पेश आने वाले फ़ितनों की ख़बर दी, सह़ाबा ने उन से ख़लास (छुटकारे) का त़रीक़ा दरयाफ़्त किया। फ़रमाया : किताबुल्लाह में तुम से पहले वाक़िआ़त की भी ख़बर है तुम से बा'द के वाक़िआ़त की भी और तुम्हारे माबैन का इ़ल्म भी। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है फ़रमाया : जो इ़ल्म चाहे वोह क़ुरआन को लाज़िम कर ले, इस में अव्वलीन व आख़िरीन की ख़बरें हैं। इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि उम्मत के सारे उ़लूम ह़दीस की शर्ह़ हैं और ह़दीस क़ुरआन की और येह भी फ़रमाया कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जो कोई हुक्म भी फ़रमाया वोह वोही था जो आप को क़ुरआने पाक से मफ़्हूम हुवा। अबू बक्र बिन मुजाहिद से मन्क़ूल है : उन्हों ने एक रोज़ फ़रमाया कि आ़लम में कोई चीज़ ऐसी नहीं जो किताबुल्लाह या'नी क़ुरआन शरीफ़ में मज़्कूर न हो, इस पर किसी ने उन से कहा : सराओं (मुसाफ़िर ख़ाने) का ज़िक्र कहां है ? फ़रमाया : इस आयत में ''لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ...اِلَخ'' (इस में तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उन घरों में जाओ जो ख़ास किसी की सुकूनत के नहीं।) इब्ने अबुल फ़ज़्ल मुरसी ने कहा कि अव्वलीन व आख़िरीन के तमाम उ़लूम क़ुरआने पाक में हैं। ग़रज़ येह किताब जामेअ़ है जमीअ़ उ़लूम की जिस किसी को इस का जितना इ़ल्म मिला है उतना ही जानता है। **204 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि इन्साफ़ तो येह है कि आदमी لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की गवाही दे और नेकी और फ़राइज़ का अदा करना और आप ही से एक और रिवायत है कि इन्साफ़ शिर्क का तर्क करना और नेकी अल्लाह की इस त़रह़ इबादत करना गोया वोह तुम्हें देख रहा है और दूसरों के लिये वोही पसन्द करना जो अपने लिये पसन्द करते हो, अगर वोह मोमिन हो तो उस के बरकाते ईमान की तरक़्क़ी तुम्हें पसन्द हो और अगर काफ़िर हो तो तुम्हें येह पसन्द आए कि वोह तुम्हारा इस्लामी भाई हो जाए। इन्हीं से एक और रिवायत है : उस में है कि इन्साफ़ तौह़ीद है और नेकी इख़्लास और इन तमाम रिवायतों का तर्ज़े बयान अगर्चे जुदा जुदा है लेकिन मआल व मुद्दआ़ एक ही है। **205 :** और उन के साथ सिलए रेह्मी और नेक सुलूक करने का **206 :** या'नी हर शर्मनाक मज़्मूम क़ौल व फ़े'ल **207 :** या'नी शिर्क व कुफ़्र व मआ़सी तमाम मम्नूआ़ते शरइ़य्या **208 :** या'नी ज़ुल्म व तकब्बुर से। इब्ने उ़यैना ने इस आयत की तफ़्सीर में कहा कि अ़द्ल ज़ाहिरो बातिन दोनों में बराबर ह़क़ व त़ाअ़त बजा लाने को कहते हैं और एह़सान येह है कि बातिन का ह़ाल ज़ाहिर से बेहतर हो और ''فَحْشَاء وَمُنْكَر وَبَغْي'' येह है कि ज़ाहिर अच्छा हो और बातिन ऐसा न हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने तीन चीज़ों का हुक्म दिया और तीन से मन्अ़ फ़रमाया : अ़द्ल का हुक्म दिया और वोह इन्साफ़ व मुसावात है अक़्वाल व अफ़्आ़ल में, इस के मुक़ाबिल فَحْشَاء या'नी बे ह़याई है वोह क़बीह़ अक़्वाल व अफ़्आ़ल हैं और एह़सान का हुक्म फ़रमाया, वोह येह है कि जिस ने ज़ुल्म किया उस को मुआ़फ़ करो और जिस ने बुराई की उस के साथ भलाई करो, इस के मुक़ाबिल مُنْكَر है या'नी मोह़सिन के एह़सान का इन्कार करना और तीसरा हुक्म इस आयत में रिश्तेदारों को देने और उन के साथ सिलए रेह्मी और शफ़्क़तो मह़ब्बत का फ़रमाया, इस के मुक़ाबिल بَغْي है और वोह अपने आप को ऊंचा खींचना और अपने अ़लाक़ादारों के ह़क़ूक़ तलफ़ करना है। इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि येह आयत तमाम ख़ैर व शर के बयान को जामेअ़ है। येही आयत ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न के इस्लाम का सबब हुई जो फ़रमाते हैं कि इस आयत के नुज़ूल से ईमान मेरे दिल में जगह पकड़ गया। इस आयत का असर इतना ज़बर दस्त हुवा कि वलीद बिन मुग़ीरा और अबू जह्ल जैसे सख़्त दिल कुफ़्फ़ार की ज़बानों पर भी इस की ता'रीफ़ आ ही गई, इस लिये येह आयत हर ख़ुत्बे के आख़िर में पढ़ी जाती है। **209 :** येह आयत उन लोगों के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से इस्लाम पर बैअ़त की थी, उन्हें अपने अ़ह्द के वफ़ा करने का हुक्म दिया गया और येह हुक्म इन्सान के हर अ़ह्दे नेक और वा'दे को शामिल है।

www.dawateislami.net

وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۹۱﴾ وَلَا

और तुम अल्लाह को[210] अपने ऊपर ज़ामिन कर चुके हो बेशक अल्लाह तुम्हारे काम जानता है और[211]

تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ؕ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ

उस औरत की तरह न हो जिस ने अपना सूत मज़बूती के बा'द रेज़ा रेज़ा कर के तोड़ दिया[212] अपनी क़समें आपस में

دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ؕ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ

एक बे अस्ल बहाना बनाते हो कि कहीं एक गुरौह दूसरे गुरौह से ज़ियादा न हो[213] अल्लाह तो इस से तुम्हें आज़माता

بِهٖ ؕ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۹۲﴾ وَلَوْ شَآءَ

है[214] और ज़रूर तुम पर साफ़ ज़ाहिर कर देगा क़ियामत के दिन[215] जिस बात में झगड़ते थे[216] और अल्लाह चाहता

اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ

तो तुम को एक ही उम्मत करता[217] लेकिन अल्लाह गुमराह करता है[218] जिसे चाहे और राह देता है[219] जिसे

يَّشَآءُ ؕ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۳﴾ وَلَا تَتَّخِذُوْۤا اَيْمَانَكُمْ

चाहे और ज़रूर तुम से[220] तुम्हारे काम पूछे जाएंगे[221] और अपनी क़समें आपस में बे अस्ल

دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ

बहाना न बना लो कि कहीं कोई पाउं[222] जमने के बा'द लग़्ज़िश न करे और तुम्हें बुराई चखनी हो[223] बदला इस का

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۹۴﴾ وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا

कि अल्लाह की राह से रोकते थे और तुम्हें बड़ा अ़ज़ाब हो[224] और अल्लाह के अ़हद पर थोड़े दाम

قَلِيْلًا ؕ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۹۵﴾ مَا عِنْدَكُمْ

मोल न लो[225] बेशक वोह[226] जो अल्लाह के पास है तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानते हो जो तुम्हारे पास है[227]

210 : उस के नाम की क़सम खा कर **211 :** तुम अ़हद और क़समें तोड़ कर **212 :** मक्कए मुकर्रमा में रैता बिन्ते अम्र एक औरत थी जिस की तबीअ़त में बहुत वहम था और अ़क़्ल में फ़ुतूर, वोह दोपहर तक मेहनत कर के सूत काता करती और अपनी बांदियों से भी कतवाती और दोपहर के वक़्त उस काते हुए को तोड़ कर रेज़ा रेज़ा कर डालती और बांदियों से भी तुड़वाती, येही उस का मा'मूल था। मा'ना येह हैं कि अपने अ़हद को तोड़ कर उस औरत की तरह बे वुक़ूफ़ न बनो। **213 :** मुजाहिद का क़ौल है कि लोगों का तरीक़ा येह था कि एक क़ौम से हल्फ़ करते और जब दूसरी क़ौम उस से ज़ियादा ता'दाद या माल या क़ुव्वत में पाते तो पहलों से जो हल्फ़ किये थे तोड़ देते और अब दूसरे से हल्फ़ करते अल्लाह तआ़ला ने इस को मन्अ़ फ़रमाया और अ़हद के वफ़ा करने का हुक्म दिया। **214 :** कि मुतीअ़ और आ़सी ज़ाहिर हो जाए **215 :** आ'माल की जज़ा दे कर **216 :** दुन्या के अन्दर **217 :** कि तुम सब एक दीन पर होते **218 :** अपने अ़द्ल से **219 :** अपने फ़ज़्ल से **220 :** रोज़े क़ियामत **221 :** जो तुम ने दुन्या में किये **222 :** राहे हक़ व तरीक़ए इस्लाम से **223 :** या'नी अ़ज़ाब **224 :** आख़िरत में **225 :** इस तरह कि दुन्याए ना पाएदार के क़लील नफ़्अ़ पर उस को तोड़ दो। **226 :** जज़ा व सवाब **227 :** सामाने दुन्या येह सब फ़ना हो जाएगा और ख़त्म।

www.dawateislami.net

يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ؕ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْۤا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ

हो चुकेगा और जो अल्लाह के पास है[228] हमेशा रहने वाला है और ज़रूर हम सब्र करने वालों को उन का वोह सिला देंगे

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۹۶﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ

जो उन के सब से अच्छे काम के क़ाबिल हो[229] जो अच्छा काम करे मर्द हो या औ़रत और हो मुसल्मान[230]

فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا

तो ज़रूर हम उसे अच्छी ज़िन्दगी जिलाएंगे[231] और ज़रूर उन्हें उन का नेग (अज्र) देंगे जो उन के सब से बेहतर काम के

يَعْمَلُوْنَ ﴿۹۷﴾ فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ

लाइक़ हो तो जब तुम कुरआन पढ़ो तो अल्लाह की पनाह मांगो शैत़ान

الرَّجِيْمِ ﴿۹۸﴾ اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ

मरदूद से[232] बेशक उस का कोई क़ाबू उन पर नहीं जो ईमान लाए और अपने रब ही पर

يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿۹۹﴾ اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ

भरोसा रखते हैं[233] उस का क़ाबू तो उन्हीं पर है जो उस से दोस्ती करते हैं और उसे

مُشْرِكُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ع وَاِذَا بَدَّلْنَاۤ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْۤا ع ١٣ ١٩

शरीक ठहराते हैं और जब हम एक आयत की जगह दूसरी आयत बदलें[234] और अल्लाह ख़ूब जानता है जो उतारता है[235] काफ़िर कहें

اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُفْتَرٍ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ

तुम तो दिल से बना लाते हो[236] बल्कि उन में अक्सर को इ़ल्म नहीं[237] तुम फ़रमाओ इसे पाकीज़गी

228 : उस का ख़ज़ानए रह़मत व सवाबे आख़िरत **229 :** या'नी उन की अदना सी अदना नेकी पर भी वोह अज्रो सवाब दिया जाएगा जो वोह अपनी आ'ला नेकी पर पाते। (ابوالسعود) **230 :** येह ज़रूर शर्त़ है क्यूं कि कुफ़्फ़ार के आ'माल बेकार हैं, अ़मले सालेह़ के मूजिबे सवाब होने के लिये ईमान शर्त़ है। **231 :** दुन्या में रिज़्क़े ह़लाल और क़नाअ़त अ़त़ा फ़रमा कर और आख़िरत में जन्नत की ने'मतें दे कर। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि अच्छी ज़िन्दगी से लज़्ज़ते इ़बादत मुराद है। **ह़िक्मत :** मोमिन अगर्चे फ़क़ीर भी हो इस की ज़िन्दगानी दौलत मन्द काफ़िर के ऐ़श से बेहतर और पाकीज़ा है क्यूं कि मोमिन जानता है कि इस की रोज़ी अल्लाह की त़रफ़ से है जो उस ने मुक़द्दर किया उस पर राज़ी होता है और मोमिन का दिल ह़िर्स की परेशानियों से मह़फ़ूज़ और आराम में रहता है और काफ़िर जो अल्लाह पर नज़र नहीं रखता वोह ह़रीस रहता है और हमेशा रन्जो तअ़ब (दुख) और तह़सीले माल की फ़िक्र में परेशान रहता है। **232 :** या'नी कुरआने करीम की तिलावत शुरूअ़ करते वक़्त "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ" पढ़ो, येह मुस्तह़ब है। اَعُوْذُ...اِلَخ के मसाइल सूरए फ़ातिह़ा की तफ़्सीर में मज़्कूर हो चुके। **233 :** वोह शैत़ानी वस्वसे क़बूल नहीं करते। **234 :** और अपनी ह़िक्मत से एक हुक्म को मन्सूख़ कर के दूसरा हुक्म दें। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीने मक्का अपनी जहालत से नस्ख़ पर ए'तिराज़ करते थे और इस की ह़िक्मतों से ना वाक़िफ़ होने के बाइ़स इस को तमस्ख़ुर बनाते थे और कहते थे कि मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) एक रोज़ एक हुक्म देते हैं दूसरे रोज़ और दूसरा ही हुक्म देते हैं, वोह अपने दिल से बातें बनाते हैं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **235 :** कि इस में क्या ह़िक्मत और उस के बन्दों के लिये इस में क्या मस्लह़त है। **236 :** अल्लाह तआ़ला ने इस पर कुफ़्फ़ार की तज्हील फ़रमाई और इर्शाद किया **237 :** और वोह नस्ख़ो तब्दील की ह़िक्मत व फ़वाइद से ख़बरदार नहीं और येह भी नहीं जानते कि कुरआने करीम की त़रफ़ इफ़्तिरा की निस्बत हो ही नहीं सकती क्यूं कि जिस कलाम के मिस्ल बनाना

الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى

की रूह़[238] ने उतारा तुम्हारे रब की त़रफ़ से ठीक ठीक कि इस से ईमान वालों को साबित क़दम करे और हिदायत और बिशारत

لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ

मुसल्मानों को और बेशक हम जानते हैं कि वोह कहते हैं येह तो कोई आदमी सिखाता है जिस की

الَّذِيْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۰۳﴾ اِنَّ

त़रफ़ ढालते (इशारा करते) हैं उस की ज़बान अ़जमी है और येह रोशन अ़रबी ज़बान[239] बेशक

الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۰۴﴾

वोह जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते[240] अल्लाह उन्हें राह नहीं देता और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है[241]

اِنَّمَا يَفْتَرِى الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ

झूट बोहतान वोही बांधते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते[242] और वोही

الْكٰذِبُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِهٖۤ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ

झूटे हैं जो ईमान ला कर अल्लाह का मुन्किर हो[243] सिवा उस के जो मजबूर किया जाए और उस का दिल

مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ وَلٰكِنْ مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ

ईमान पर जमा हुवा हो[244] हां वोह जो दिल खोल कर[245] काफ़िर हो उन पर अल्लाह का

क़ुदरते बशरी से बाहर है, वोह किसी इन्सान का बनाया हुवा कैसे हो सकता है ! लिहाज़ा सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़िताब हुवा **238 :** या'नी ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام **239 :** क़ुरआने करीम की ह़लावत और इस के उ़लूम की नूरानिय्यत जब क़ुलूब की तस्ख़ीर (दिलों को अपनी त़रफ़ माइल) करने लगी और क़ुफ़्फ़ार ने देखा कि दुन्या इस की गिरवीदा होती चली जाती है और कोई तदबीर इस्लाम की मुख़ालफ़त में काम्याब नहीं होती तो उन्हों ने त़रह़ त़रह़ के इफ़्तिरा उठाने (बोहतान लगाने) शुरूअ़ किये कभी इस को सेह़र बताया तो कभी पहलों के क़िस्से और कहानियां कहा, कभी येह कहा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने येह ख़ुद बना लिया है और हर त़रह़ कोशिश की, कि किसी त़रह़ लोग इस किताबे मुक़द्दस की त़रफ़ से बद गुमान हों, इन्हीं मक्कारियों में से एक मक्र येह भी था कि उन्हों ने एक अ़जमी ग़ुलाम की निस्बत कहा कि वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को सिखाता है। इस के रद में येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इर्शाद फ़रमाया गया कि ऐसी बातिल बातें दुन्या में कौन क़बूल कर सकता है, जिस ग़ुलाम की त़रफ़ कुफ़्फ़ार निस्बत करते हैं वोह तो अ़जमी है ऐसा कलाम बनाना उस के तो क्या इम्कान में होता तुम्हारे फ़ुसह़ा व बुलग़ा जिन की ज़बान दानी पर अहले अ़रब को फ़ख़्रो नाज़ है वोह सब के सब ह़ैरान हैं और चन्द जुम्ले क़ुरआन की मिस्ल बनाना उन्हें मुह़ाल और उन की क़ुदरत से बाहर है तो एक अ़जमी की त़रफ़ ऐसी निस्बत किस क़दर बातिल और बेशर्मी का फ़े'ल है, ख़ुदा की शान जिस ग़ुलाम की त़रफ़ कुफ़्फ़ार येह निस्बत करते थे उस को भी इस कलाम के ए'जाज़ ने तस्ख़ीर किया और वोह भी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ह़ल्क़ा बगोशे ता़अ़त हुवा और सिद्क़ो इख़्लास के साथ ईमान लाया। **240 :** और इस की तस्दीक़ नहीं करते **241 :** ब सबब इन्कारे क़ुरआन व तक्ज़ीबे रसूल عَلَيْهِ السَّلَام के। **242 :** या'नी झूट बोलना और इफ़्तिरा करना बे ईमानों ही का काम है। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि झूट कबीरा गुनाहों में बद तरीन गुनाह है। **243 :** उस पर अल्लाह का ग़ज़ब, **244 :** वोह मग़ज़ूब नहीं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़म्मार बिन यासिर के ह़क़ में नाज़िल हुई, उन्हें और उन के वालिद यासिर और उन की वालिदा सुमय्या और सुहैब और बिलाल और ख़ब्बाब और सालिम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को पकड़ कर कुफ़्फ़ार ने सख़्त सख़्त ईज़ाएं दीं ताकि वोह इस्लाम से फिर जाएं लेकिन येह ह़ज़रात न फिरे, तो कुफ़्फ़ार ने ह़ज़रते अ़म्मार के वालिदैन को बहुत बे रह़मियों से क़त्ल किया और अ़म्मार

www.dawateislami.net

مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠٦﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

ग़ज़ब है और उन को बड़ा अ़ज़ाब है येह इस लिये कि उन्हों ने दुन्या की ज़िन्दगी आख़िरत से

عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

प्यारी जानी[246] और इस लिये कि अल्लाह (ऐसे) काफ़िरों को राह नहीं देता येह हैं वोह जिन के

طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٠٨﴾

दिल और कान और आंखों पर अल्लाह ने मोहर कर दी है[247] और वोही ग़फ़्लत में पड़े हैं[248]

لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٠٩﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ

आप ही हुवा कि आख़िरत में वोही ख़राब हैं[249] फिर बेशक तुम्हारा रब उन के लिये जिन्हों ने

هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا

अपने घर छोड़े[250] बा'द इस के कि सताए गए[251] फिर उन्हों ने[252] जिहाद किया और साबिर रहे बेशक तुम्हारा रब इस[253] के बा'द

لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٠﴾ ع يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ ١٤ ع ٢٠

ज़रूर बख़्शने वाला है मेहरबान जिस दिन हर जान अपनी ही तरफ़ झगड़ती आएगी[254] और हर जान को

نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١١١﴾ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً

उस का किया पूरा भर दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म न होगा[255] और अल्लाह ने कहावत बयान फ़रमाई[256] एक बस्ती[257]

ज़ईफ़ थे भाग नहीं सकते थे, उन्हों ने मजबूर हो कर जब देखा कि जान पर बन गई तो बा दिले न ख़्वास्ता कलिमए कुफ़्र का तलफ़्फ़ुज़ कर दिया। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़बर दी गई कि अ़म्मार काफ़िर हो गए। फ़रमाया : हरगिज़ नहीं ! अ़म्मार सर से पाउं तक ईमान से पुर हैं और उस के गोश्त और ख़ून में ज़ौक़े ईमानी सरायत कर गया है, फिर हज़रते अ़म्मार रोते हुए ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए, हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या हुवा ? अ़म्मार ने अ़र्ज़ किया : ऐ ख़ुदा के रसूल ! बहुत ही बुरा हुवा और बहुत ही बुरे कलिमे मेरी ज़बान पर जारी हुए। इर्शाद फ़रमाया : उस वक़्त तेरे दिल का क्या हाल था ? अ़र्ज़ किया : दिल ईमान पर ख़ूब जमा हुवा था। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने शफ़्क़तो रहमत फ़रमाई और फ़रमाया कि अगर फिर ऐसा इत्तिफ़ाक़ हो तो येही करना चाहिये, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। (خازن)

मस्अला : आयत से मा'लूम हुवा कि हालाते इक्राह (कुफ़्र पर मजबूर किये जाने की हालत) में अगर दिल ईमान पर जमा हुवा हो तो कलिमए कुफ़्र का इज़्रा (ज़बान पर जारी करना) जाइज़ है जब कि आदमी को अपने जान या किसी उ़ज़्व के तलफ़ (ज़ाएअ़) होने का ख़ौफ़ हो।

मस्अला : अगर इस हालत में भी सब्र करे और क़त्ल कर डाला जाए तो वोह माजूर (सवाब पाएगा) और शहीद होगा, जैसा कि हज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने सब्र किया और वोह सूली पर चढ़ा कर शहीद कर डाले गए। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन्हें सय्यिदुश्शुहदा फ़रमाया।

मस्अला : जिस शख़्स को मजबूर किया जाए अगर उस का दिल ईमान पर जमा हुवा न हो, वोह कलिमए कुफ़्र ज़बान पर लाने से काफ़िर हो जाएगा।

मस्अला : अगर कोई शख़्स बिग़ैर मजबूरी के तमस्ख़ुर या जहल से कलिमए कुफ़्र ज़बान पर जारी करे काफ़िर हो जाएगा। (تفسیر احمدی) **245 :** रिज़ा मन्दी और ए'तिक़ाद के साथ **246 :** और येह दुन्या इरतिदाद (मुरतद होने) पर इक़्दाम करने का सबब है। **247 :** न वोह तदब्बुर (अन्जाम पर ग़ौर) करते हैं, न मवाइ़ज़ व नसाएह़ पर कान रखते हैं, न त़रीक़े रुश्दो सवाब को देखते हैं। **248 :** कि अपनी आ़क़िबत व अन्जामे कार को नहीं सोचते। **249 :** कि उन के लिये दाइमी अ़ज़ाब है। **250 :** और मक्कए मुकर्रमा से मदीनए त़य्यिबा को हिजरत की **251 :** कुफ़्फ़ार ने उन पर सख़्तियां कीं और उन्हें कुफ़्र पर मजबूर किया। **252 :** हिजरत के बा'द **253 :** हिजरत व जिहाद व सब्र **254 :** वोह रोज़े क़ियामत है जब हर एक नफ़्सी नफ़्सी कहता होगा और सब को अपनी अपनी पड़ी होगी। **255 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत लोगों में ख़ुसूमत (दुश्मनी) यहां तक बढ़ेगी कि रूह व

www.dawateislami.net

كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ

कि अमान व इत्मीनान से थी[258] हर तरफ़ से उस की रोज़ी कसरत से आती तो वोह अल्लाह की ने'मतों की नाशुक्री करने लगी[259]

بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿۱۱۲﴾

तो अल्लाह ने उसे येह सज़ा चखाई कि उसे भूक और डर का पहनावा पहनाया[260] बदला उन के किये का

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ

और बेशक उन के पास उन्हीं में से एक रसूल तशरीफ़ लाया[261] तो उन्हों ने उसे झुटलाया तो उन्हें अ़ज़ाब ने पकड़ा[262] और वोह

ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ

बे इन्साफ़ थे तो अल्लाह की दी हुई रोज़ी[263] ह़लाल पाकीज़ा खाओ[264] और अल्लाह की ने'मत का शुक्र करो

اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۱۴﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ

अगर तुम उसे पूजते हो तुम पर तो येही ह़राम किया है मुर्दार और ख़ून और सुअर का

الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ

गोश्त और वोह जिस के ज़ब्ह़ करते वक़्त ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया[265] फिर जो लाचार हो[266] न ख़्वाहिश करता और न ह़द से बढ़ता[267] तो बेशक

जिस्म में झगड़ा होगा। रूह़ कहेगी : या रब ! न मेरे हाथ था कि मैं किसी को पकड़ती न पाउं था कि चलती न आंख थी कि देखती। जिस्म कहेगा : या रब ! मैं तो लकड़ी की त़रह़ था न मेरा हाथ पकड़ सकता था न पाउं चल सकता था न आंख देख सकती थी, जब येह रूह़ नूरी शुआ़ओं की त़रह़ आई तो इस से मेरी ज़बान बोलने लगी, आंख बीना हो गई, पाउं चलने लगे, जो कुछ किया इस ने किया। अल्लाह तआ़ला एक मिसाल बयान फ़रमाएगा कि एक अन्धा और एक लूला दोनों एक बाग़ में गए, अन्धे को तो फल नज़र नहीं आते थे और लूले का हाथ उन तक नहीं पहुंचता था तो अन्धे ने लूले को अपने ऊपर सुवार कर लिया, इस त़रह़ उन्हों ने फल तोड़े तो सज़ा के वोह दोनों मुस्तह़िक़ हुए, इस लिये रूह़ और जिस्म दोनों मुल्ज़म हैं। **256 :** ऐसे लोगों के लिये जिन पर अल्लाह तआ़ला ने इन्आ़म किया और वोह उस ने'मत पर मग़रूर हो कर नाशुक्री करने लगे काफ़िर हो गए। येह सबब अल्लाह तआ़ला की नाराज़ी का हुवा, उन की मिसाल ऐसी समझो जैसे कि **257 :** मिस्ल मक्का के **258 :** न उस पर ग़नीम चढ़ता (दुश्मन ह़म्ला करता) न वहां के लोग क़त्ल व क़ैद की मुसीबत में गिरिफ़्तार किये जाते। **259 :** और उस ने अल्लाह के नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब की। **260 :** कि सात बरस नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बद दुआ़ से क़ह़त़ और ख़ुश्क साली की मुसीबत में गिरिफ़्तार रहे, यहां तक कि मुर्दार खाते थे, फिर अम्नो इत्मीनान के बजाए ख़ौफ़ो हिरास उन पर मुसल्लत़ हुवा और हर वक़्त मुसल्मानों के ह़म्ले और लश्कर कशी का अन्देशा रहने लगा। **261 :** या'नी सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **262 :** भूक और ख़ौफ़ के **263 :** जो उस ने सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक से अ़त़ा फ़रमाई। **264 :** बजाए उन ह़राम और ख़बीस अम्वाल के जो खाया करते थे लूट, ग़स्ब और ख़बीस मकासिब (पेशे) से ह़ासिल किये हुए। जुम्हूर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक इस आयत में मुख़ात़ब मुसल्मान हैं और एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का येह भी है कि मुख़ात़ब मुश्रिकीने मक्का हैं। कलबी ने कहा कि जब अहले मक्का क़ह़त़ के सबब भूक से परेशान हुए और तक्लीफ़ की बरदाश्त न रही तो उन के सरदारों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि आप से दुश्मनी तो मर्द करते हैं औ़रतों और बच्चों को जो तक्लीफ़ पहुंच रही है उस का ख़याल फ़रमाइये। इस पर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इजाज़त दी कि उन के लिये त़आ़म ले जाया जाए, इस आयत में इस का बयान हुवा। इन दोनों क़ौलों में अव्वल सह़ीह़ तर है। (خازن) **265 :** या'नी उस को बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ किया गया हो। **266 :** और इन ह़राम चीज़ों में से कुछ खाने पर मजबूर हो **267 :** या'नी क़दरे ज़रूरत पर सब्र कर के।

www.dawateislami.net

اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٥﴾ وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا

अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है और न कहो उसे जो तुम्हारी ज़बानें झूट बयान करती हैं येह

حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ

हलाल है और येह हराम है कि अल्लाह पर झूट बांधो[268] बेशक जो

يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿١١٦﴾ ؕ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّلَهُمْ

अल्लाह पर झूट बांधते हैं उन का भला न होगा थोड़ा बरत्ना है[269] और उन के लिये

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١٧﴾ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ

दर्दनाक अ़ज़ाब[270] और ख़ास यहूदियों पर हम ने हराम फ़रमाई वोह चीज़ें जो पहले तुम्हें

قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٨﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ

सुनाई[271] और हम ने उन पर जुल्म न किया हां वोही अपनी जानों पर जुल्म करते थे[272] फिर बेशक तुम्हारा रब

لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْۤا

उन के लिये जो नादानी से[273] बुराई कर बैठें फिर उस के बा'द तौबा करें और संवर जाएं

اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾ ع اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا ١٥ ع ٢١

बेशक तुम्हारा रब इस के बा'द[274] ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है बेशक इब्राहीम एक इमाम था[275] अल्लाह का फ़रमां बरदार

لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ؕ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٠﴾ ۙ شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰىهُ

और सब से जुदा[276] और मुश्रिक न था[277] उस के एह़सानों पर शुक्र करने वाला अल्लाह ने उसे चुन लिया[278]

وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٢١﴾ وَاٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَاِنَّهٗ

और उसे सीधी राह दिखाई और हम ने उसे दुन्या में भलाई दी[279] और बेशक वोह

268 : ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग अपनी त़रफ़ से बा'ज़ चीज़ों को ह़लाल बा'ज़ चीज़ों को ह़राम कर लिया करते थे और उस की निस्बत अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ कर दिया करते थे, इस की मुमानअ़त फ़रमाई गई और इस को अल्लाह पर इफ़्तिरा फ़रमाया गया। आज कल भी जो लोग अपनी त़रफ़ से ह़लाल चीज़ों को ह़राम बता देते हैं जैसे मीलाद शरीफ़ की शीरीनी, फ़ातिह़ा, ग्यारहवीं, उ़र्स वग़ैरा ईसाले सवाब की चीज़ें जिन की हुरमत शरीअ़त में वारिद नहीं हुई, उन्हें इस आयत के हुक्म से डरना चाहिये कि ऐसी चीज़ों की निस्बत येह कह देना कि येह शरअ़न ह़राम हैं अल्लाह तआ़ला पर इफ़्तिरा करना है। **269 :** और दुन्या की चन्द रोज़ा आसाइश है जो बाक़ी रहने वाली नहीं। **270 :** है आख़िरत में **271 :** सूरए अन्आ़म में आयत "وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِىْ ظُفُرٍ الآية" में **272 :** बग़ावत व मा'सियत का इरतिकाब कर के जिस की सज़ा में वोह चीज़ें उन पर ह़राम हुईं, जैसा कि आयत "فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ" में इर्शाद फ़रमाया गया। **273 :** बिग़ैर अन्जाम सोचे **274 :** या'नी तौबा के **275 :** नेक ख़साइल और पसन्दीदा अख़्लाक़ और ह़मीदा सिफ़ात का जामेअ़ **276 :** दीने इस्लाम पर क़ाइम **277 :** इस में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की तक्ज़ीब है जो अपने आप को दीने इब्राहीमी पर ख़याल करते थे। **278 :** अपनी नुबुव्वत व ख़ुल्लत के लिये **279 :** रिसालत

www.dawateislami.net

فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٢٢﴾ ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ

आख़िरत में शायाने क़ुर्ब है फिर हम ने तुम्हें वह्य भेजी कि दीने इब्राहीम की पैरवी

اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى

करो जो हर बातिल से अलग था और मुश्रिक न था[280] हफ़्ता तो उन्हीं पर रखा गया था

الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا

जो इस में मुख़्तलिफ़ हो गए[281] और बेशक तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उन में फ़ैसला कर देगा जिस बात में

كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ

इख़्तिलाफ़ करते थे[282] अपने रब की राह की तरफ़ बुलाओ[283] पक्की तदबीर और अच्छी

الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ

नसीहत से[284] और उन से उस तरीक़े पर बहस करो जो सब से बेहतर हो[285] बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उस की

عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٢٥﴾ وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ

राह से बहका और वोह ख़ूब जानता है राह वालों को और अगर तुम सज़ा दो तो वैसी ही सज़ा दो

مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاصْبِرْ

जैसी तक्लीफ़ तुम्हें पहुंचाई थी[286] और अगर तुम सब्र करो[287] तो बेशक सब्र वालों को सब्र सब से अच्छा और ऐ महबूब तुम सब्र करो

व अम्वाल व औलाद व सनाए हसन व क़बूले आम कि तमाम अद्यान वाले मुसल्मान और यहूद और नसारा और अरब के मुश्रिकीन सब इन की अज़मत करते और इन से महब्बत रखते हैं। **280 :** इत्तिबाअ से मुराद यहां अक़ाइद व उसूले दीन में मुवाफ़क़त करना है। सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को इस इत्तिबाअ का हुक्म किया गया, इस में आप की अज़मतो मन्ज़िलत और रिफ़अते दरजत (बुलन्द दरजात) का इज़्हार है कि आप का दीने इब्राहीमी की मुवाफ़क़त फ़रमाना हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये उन के तमाम फ़ज़ाइलो कमालात में सब से आ'ला फ़ज़्लो शरफ़ है क्यूं कि आप अक्वमुल अव्वलीन वल आख़िरीन हैं जैसा कि सहीह हदीस में वारिद हुवा और तमाम अम्बिया और कुल ख़ल्क़ से आप का मर्तबा अफ़ज़लो आ'ला है : تو اصلی وباقی طفیل تواند : تو شاہی ومجموع خیل تواند (सब से पहले आप हैं और बाक़ी सब आप के तुफ़ैल, आप बादशाह हैं बाक़ी सब आप की रिआया है) **281 :** या'नी शम्बे की ता'ज़ीम और इस रोज़ शिकार तर्क करना और वक़्त को इबादत के लिये फ़ारिग़ करना यहूद पर फ़र्ज़ किया गया था और इस का वाक़िआ इस तरह हुवा था कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन्हें रोज़े जुमुआ की ता'ज़ीम का हुक्म फ़रमाया था और इर्शाद किया था कि हफ़्ते में एक दिन **अल्लाह** तआला की इबादत के लिये ख़ास करो, इस दिन में कुछ काम न करो, इस में उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया और कहा वोह दिन जुमुआ नहीं बल्कि सनीचर होना चाहिये बजुज़ एक छोटी सी जमाअत के जो हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के हुक्म की ता'मील में जुमुआ पर ही राज़ी हो गई थी। **अल्लाह** तआला ने यहूद को सनीचर की इजाज़त दे दी और शिकार हराम फ़रमा कर इब्तिला (इम्तिहान) में डाल दिया तो जो लोग जुमुआ पर राज़ी हो गए थे वोह तो मुतीअ रहे और उन्हों ने इस हुक्म की फ़रमां बरदारी की। बाक़ी लोग सब्र न कर सके उन्हें शिकार किये और नतीजा येह हुवा कि मस्ख़ किये गए। येह वाक़िआ तफ़्सील के साथ सूरए आ'राफ़ में बयान हो चुका है। **282 :** इस तरह कि मुतीअ को सवाब देगा और आसी को इक़ाब (अज़ाब) फ़रमाएगा। इस के बा'द सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़िताब फ़रमाया जाता है : **283 :** या'नी ख़ल्क़ को दीने इस्लाम की दा'वत दो **284 :** पक्की तदबीर से वोह दलीले मोहकम मुराद है जो हक़ को वाज़ेह और शुबहात को ज़ाइल कर दे और अच्छी नसीहत से तरग़ीबात व तरहीबात मुराद हैं। **285 :** बेहतर तरीक़ से मुराद येह है कि **अल्लाह** तआला की तरफ़ उस की आयात और दलाइल से बुलाएं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि दा'वते हक़ और इज़्हारे हक़्क़ानिय्यते दीन के लिये मुनाज़रा जाइज़ है।

www.dawateislami.net

وَ مَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَ لَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَ لَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا

और तुम्हारा सब्र **अल्लाह** ही की तौफ़ीक़ से है और उन का ग़म न खाओ[288] और उन के फ़रेबों से दिलतंग

يَمْكُرُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّ الَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ ع ١٦ ركوع ٢٢

न हो[289] बेशक **अल्लाह** उन के साथ है जो डरते हैं और जो नेकियां करते हैं

286 : या'नी सज़ा ब क़दरे जनायत (जुर्म के बराबर) हो उस से ज़ाइद न हो। **शाने नुज़ूल :** जंगे उहुद में कुफ़्फ़ार ने मुसल्मानों के शुहदा के चेहरों को ज़ख़्मी कर के उन की शक्लों को तब्दील किया था और उन के पेट चाक किये थे उन के आ'ज़ा काटे थे उन शुहदा में हज़रते हम्ज़ा भी थे। सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जब उन्हें देखा तो हुज़ूर को बहुत सदमा हुवा और हुज़ूर ने क़सम खाई कि एक हज़रते हम्ज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का बदला सत्तर काफ़िरों से लिया जाएगा और सत्तर का येही हाल किया जाएगा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई तो हुज़ूर ने वोह इरादा तर्क फ़रमाया और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा दिया। **मस्अला :** मुस्लह या'नी नाक, कान वग़ैरा काट कर किसी की हैअत को तब्दील करना शरअ़ में हराम है। (مدارک) **287 :** और इन्तिक़ाम न लो **288 :** अगर वोह ईमान न लाएं **289 :** क्यूं कि हम तुम्हारे मुईन व नासिर हैं।

www.dawateislami.net